CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

V.B.P.

वैदिक धर्म

वर्ष ५३ : अंक ७ : ज्येष्ठ : २०२९
स्वामी— स्वाध्याय-मंडल, पारडी [जि. वलसाड]

संस्थापक एवं आद्यसंपादक
श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

संपादक
वसंत श्रीपाद सातवलेकर

विषयानुक्रमणिका

卐

सत्यका रक्षक सोम	[वैदिक प्रार्थना]	९९
अन्तरिक्ष शोधनका उपाय	पं. श्री वीरसेन वेदश्रमी	१००
भारतीय वैमानिक विद्या	श्री शोभनाथ पाठक	१०५
सत्कार - समालोचना		१०७
महर्षि दयानंद विश्व विद्यालयका निर्माण	वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी	१०८
गणित - फलित ज्योतिष मीमांसा	श्री रामपालसिंह तेवतिया	१११
आसन	श्री पं. श्री. दा. सातवलेकर	८९ से ९६
ऋग्वेदका सुबोध भाष्य	श्री पं. श्री. दा. सातवलेकर	२०९ से २२४

'वैदिक धर्म' वार्षिक मूल्य म. आ. से ६) रु.

वी. पी. से रु. ७.५० विदेशके लिए रु. ८.०० डाक व्यय अलग रहेगा।

इस अंकमें प्रसिद्ध किये गये लेखकोंके लेखोंमेंके मतों और विचारोंसे संपादक सहमत है ऐसा नहीं है। उन लेखोंमेंके विचारोंके लिये केवल लेखकही व्यक्तिशः उत्तरदायी हैं।

मंत्री— स्वाध्याय-मण्डल, पो.- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)' पारडी [जि. वलसाड]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिर प्रतीक्षित] [छप गया

पण्डित सातवलेकर-जीवन-प्रदीप

मूल लेखक
श्री पु. पां. गोखले

अनुवादक
श्रुतिशील शर्मा

वेदमहर्षि पं. श्री. दा. सातवलेकरके जिस जीवनचरित्रकी प्रतीक्षा बहुत दिनोंसे की जा रही थी, वह अब छपकर तैय्यार हो गया है।

इस ग्रन्थमें उनके जीवनके हर पक्षको प्रस्तुत किया गया है। उपन्यासकी शैलीसे लिखा गया यह ग्रन्थ पठनीय और संग्रहणीय है।

उत्तम कागज, उत्तम छपाई, मुखपृष्ठ पर पण्डितजीका तीनरंगी आकर्षक चित्र, आकर्षक डेमी साइज, पृष्ठ– ३१५, मूल्य– १०)।

प्रतियां बहुत सीमित हैं। आज ही मंगा लें।

इस ग्रन्थ पर १५% कमीशन दिया जायेगा। आज ही अपना ऑर्डर भेजें।

स्वाध्याय मण्डल, पारडी
जि. बलसार
(गुजरात)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैदिक धर्म

सत्यका रक्षक सोम

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय
सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदि-
त्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥

(अथर्व. ८-४-१२)

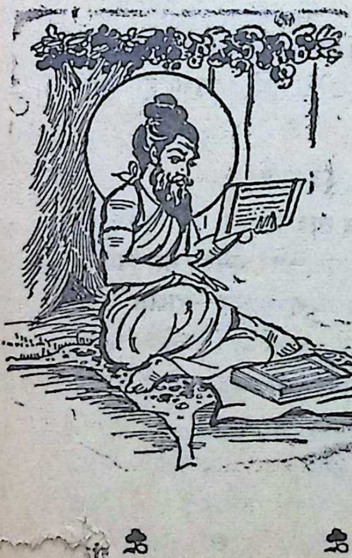

(चिकितुषे जनाय सुविज्ञानं) ज्ञान प्राप्त करनेवाले मनुष्यके लिये यह उत्तम ज्ञान कहा जाता है कि, (सत् च असत् च) सत्य और असत्यके (वचसी पस्पृधाते) भाषणोंमें स्पर्धा होती है । (तयो यत् सत्यं) उनमें जो सत्य है और (यतरत् ऋजीयः) जो सरल है, (तत् इत् सोमः अवति) उसकी सोम रक्षा करता है और (असत् हन्ति) असत्यका विनाश करता है ।

सब लोगोंको यह सत्य ज्ञान कहा जाता है कि सत्य और असत्यकी स्पर्धा इस जगत्में चल रही है । जो सत्य और जो सीधा है उसकी रक्षा परमेश्वर करता है और जो असत्य है उसका नाश करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक : पं. श्री वीरसेन वेदश्रमी

अन्तरिक्ष शोधनका उपाय

विषाल अन्तरिक्ष प्राणघातक

संसारके वैज्ञानिकोंके सम्मुख अन्तरिक्षमें बढते हुए विषयुक्त प्रभावने एक चिन्ता उत्पन्न कर दी है। उनका यह अनुमान है कि यदि अन्तरिक्षको शुद्ध एवं निर्विष करनेका उपाय न किया गया तो शीघ्र ही कुछ वर्षोंमें ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जायगी कि प्राणी जीवित नहीं रह सकेंगे। अतः इस समस्याका हल शीघ्र निकालना मानव जीवनके अस्तित्वके लिये परमावश्यक है। इस निमित्त वैज्ञानिकोंकी अनेक बार विचार गोष्ठियां भी हुई परन्तु अभी इस समस्याका समुचित हल सम्मुख नहीं आया।

समस्याका हल यज्ञसे होगा

प्राचीन समयमें भी भारतके महान् वैज्ञानिक ऋषि – मुनियोंके सम्मुख भी यह समस्या उपस्थित हुई थी और उनने वैदिक विज्ञानके आधारपर उसका एक सर्वोत्तम हल निकाला था – और वह था– यज्ञ ! आजकी परिस्थितिमें भी यह उपाय है – और एक मात्र यही सरल उपाय है। इसीलिये वैदिक विज्ञानकी भाषामें– यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म– (शतपथ १।५।४।५) कहा गया है। अर्थात् यज्ञ निश्चयसे सबसे श्रेष्ठ कर्म है। अतः इसको करना धर्म माना गया।

रोग और असुर

शरीरमें मलों–विषोंके संचयसे उत्पन्न विकारको रोग कहा जाता है उसी प्रकार अन्तरिक्ष या वायुमें मलों या विषोंके संचयसे उत्पन्न विकारों एवं प्राणघातक तत्वोंको वैदिक विज्ञानकी परिभाषामें असुर, राक्षस कहा जाता है। वातावरणमें प्राणघातक तत्वोंकी प्रधानता ही असुर, राक्षस तत्वोंकी वृद्धि या विजय है। यज्ञ ही असुर – राक्षसोंका निवारक है। प्राचीन कालमें ऐसे असुर – राक्षसोंके वध– विनाशके लिये एक मात्र उपाय यज्ञका ही प्रचलित था।

असुरोंके नाशका उपाय

यजुर्वेद अध्याय २।२९ में कहा है– अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा– सोमाय पितृमते स्वाहा– अपहता असुरा रक्षांसि वैदिषदः – अर्थात् कव्य अन्नादिकी आहुतिका वहन करनेवाली अग्निके लिये आहुति दें– पितृ-पालक शक्तियुक्त सोमके लिये आहुति प्रदान करें। इससे पृथिवी एवं अन्तरिक्षमें जो प्राणघातक, पीडा देनेवाले असुर और राक्षस गुणवाले तत्व हैं वे विनष्ट होते हैं। अथर्ववेदमें भी अग्निको यज्ञ द्वारा दूत बनाकर असुर राक्षसोंको नष्ट करनेका प्रयोग करनेको निम्न शब्दोंमें कहा है– दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् विलापय– (अथर्व १।७।६) इस प्रकार वेदने अन्तरिक्षको विनाशक तत्वोंसे शोधित करनेके लिये यज्ञका ही मार्ग बताया है।

असुरोंका स्वभाव

अन्तरिक्षस्थ असुर – राक्षस तत्वोंका अनियत परिणाम व आयतन होता है अतः अनिश्चत रूपके या विविध प्रकारके परिमाण, आयतन एवं स्वरूपके असुर–राक्षस होते हैं। ये वायुरूपमें पृथिवी एवं अन्तरिक्षमें अनेक रूपमें विचरण करते हैं। अतः ये मायवी भी माने जाते हैं। प्रिय प्रतीत होते हुए भी प्राण पीडक, प्राणघातक, विषयुक्त, रोगजनक एवं दुःख देनेवाले होते हैं। हमारे पोषक तत्वों वायु, जल अन्नादिके साथ प्रिय रूपमें होकर हमसे निकट सम्पर्क भी करते हैं और अन्तरिक्षके दूरस्थ स्थानोंमें [illegible] विचरण करते हैं अतः इनका विनाश ही हमारा जीवन और इनकी वृद्धि ही हमारा विनाश है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय ...

... ललितपुर, काठमाण्डू (नेपाल)

असुर नाशक अग्नि

ऐसी स्थितिका वर्णन करते हुए उसका उपाय भी वेदने निम्न शब्दोंमें किया है :—

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः
सन्तः स्वधया चरन्ति ।
पुरापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टा-
ल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥
(यजु. २।३०)

अर्थात्– उपरोक्त रूपमें जो असुरतत्व हैं उनको अग्नि ही इस लोकसे भगाता है या दूर करता है। हमारा लोक यही है जिसके आधारपर हमारा जीवन व्यवहार चलता है। इस पृथिवी और अन्तरिक्षमेंसे असुर – राक्षस तत्वोंके यज्ञ द्वारा नष्ट होनेपर पितृ शक्तियां – पालन करनेवाली शक्तियां या गुणोंकी प्राधान्यता होने लगती है। अतः वेद कहता है कि इस प्रक्रियासे– अत्र पितरो मादयध्वम्– (यजु २।३१) जब असुर – राक्षस तत्व दूर हो जावेंगे तो यहां हमारे समीप पितृ शक्तियां, पालनकर्ता तत्व प्रसन्न विकसित, प्रहर्षित हो विचरण करेंगी – हमारी 'सोमाय स्वाहा' – की आहुतिसे वे आनन्द और वृद्धिको प्राप्त होकर पृथिवी एवं अन्तरिक्षमें व्याप्त होकर हमें जीवन देती रहेंगी। तभी हमारा सम्यक् रूपसे निर्विघ्न जीवन यापन अन्तरिक्षसे भी हो सकेगा अन्यथा अन्तरिक्ष उत्तरोत्तर असुर– राक्षसों अर्थात् प्राणघातक विषाल वायुओंसे परिपूर्ण हो जायगा।

अन्तरिक्षको मलरहित करें

प्राणियोंके शरीरोंमें रोगोंका प्रादुर्भाव मलों, दोषोंके संचयसे ही होता है, अतः अन्तरिक्षमें मलों, दोषोंके संचयसे क्यों न समस्त प्राणियोंका जीवन – मृत्युके पंजेसे पकडा जाये ? जिस प्रकार शरीरके रोगोंको दूर करनेके लिये शरीरसे मलोंका निर्गमन अत्यन्त आवश्यक है उसी प्रकार प्राणियोंके जीवनके लिये और अकाल मृत्युके पंजेसे छुडानेके लिये अन्तरिक्षको भी मल, दोष एवं विषादिसे रहित करना आवश्यक ही है। अग्नि, वायु और जलके द्वारा शरीरके ...ंश मलोंका हमारे शरीरसे निःसरण प्रश्वास, अपान- ...ल, मूत्र, स्वेद आदिके द्वारा स्वाभाविक रूपसे होता ... जिससे शरीर स्वस्थ, नीरोग एवं दीर्घजीवी बनता है। इसी प्रकार अन्तरिक्षको भी अग्नि, वायु और जल द्वारा शुद्ध किया जा सकता है।

प्राण शरीरके मलोंका शोधक है

यदि शरीरमें मलों, दोषों एवं विषोंका संचय अधिक हो जाता है और शरीरकी स्वाभाविक क्रियायें उन सब मलोंको निकालनेमें असमर्थ हो जाती हैं तो वे मल शरीरमें उपद्रव रूपमें अनेक प्रकारके रोग – बीमारीके रूपमें प्रकट होने लगते हैं। ऐसी स्थितीमें उन उपद्रवोंका शमन, दमन, भेदन, निवारण या विनाश करनेके लिये शरीरकी प्राणशक्ति हमें बाहरके कार्योंसे विरत कर विश्राम लेनेके लिये बाधित कर देती है और वह प्राणशक्ति शरीरसे मलोंको बाहर निकालनेके लिये तीव्र गतिसे एवं शक्तिके साथ कार्य करने लगती है। परिणाम स्वरूप श्वास– प्रश्वासकी क्रिया विशेष गतिशील हो जाती है।

ताप भी मलोंका शोधक है

श्वास–प्रश्वासकी तीव्रताके कारण शरीरके तापमें वृद्धि हो जाती है। श्वास–प्रश्वासकी तीव्रता, बहुलता और ताप वृद्धिसे मलों या विकारोंका प्रश्वास एवं स्वेदादिके द्वारा शीघ्रतासे बहिर्गमन होने लगता है और अग्निके तापकी वृद्धिसे मल भी विनष्ट होने लगते हैं जिससे शरीर स्वस्थ होने लगता है। यदि कोई बडा मल अवरोधक रूपमें निकलनेमें असमर्थ होता है तो उसको निकलने या पचानेके लिये बाहरसे किसी पदार्थ, औषधि आदिकी उपचार व क्रिया आदिकी एवं अन्य व्यक्तिकी सहायता लेनी पडती है। इस प्रकार दोषों, मलों, विकारों या विषोंके पच जाने या बाहर निकल जानेसे शरीर स्वस्थ स्थितिको प्राप्त कर लेता है।

चिकित्सक और देवभिषक्

देहकी स्थितिके अनुसार ही विश्वकी स्थिति है। शरीरकी चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक, वैद्य, डाक्टर आदि कहा जाता है। विश्वकी – पृथिवी एवं अन्तरिक्षकी यज्ञ द्वारा चिकित्सा, उसका शोधन करनेवाला पुरोहित, देव, ऋत्विज, होता आदि कहा जाता है। विश्वकी चिकित्सा यज्ञके द्वारा होती है। यज्ञ अग्निसे ही होता है अतः ऋग्वेदके प्रथम मन्त्रमें अग्निको पुरोहित, ऋत्विज् होता, देव आदि विशेषणोंसे वर्णित किया गया है। अतः अन्तरिक्षको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिकित्सा, उसके शोधनका कार्य यज्ञाग्निके माध्यमसे वेद विज्ञानवेत्ता पुरोहित, होता, ऋत्विज् आदि ही कर सकेंगे। ये देवभिषक् हैं। इसके अतिरिक्त, अग्नि, जल, वायु, पृथिवी आदि भी देव-भिषक् हैं।

विश्वके पदार्थोंमें सहयोग

जिस प्रकार शरीरके अंग-प्रत्यंग और उनकी क्रियायें शारीरिक जीवनका संचालन करती हैं, उसी प्रकार विश्वके पदार्थ एवं शक्तियां अपना - अपना कार्य सम्पादन कर एक दूसरेके पूरक सहयोगी एवं समान-धर्मा या विरोधी एवं प्रतिस्पर्धी बनकर कार्य करते हुए विश्वका जीवन हमारे लिये उपयोगी बनाते हैं।

अन्तरिक्ष शोधक मातरिश्वा वायु

अन्तरिक्षमें विचरण करनेवाला मातरिश्वा नामक वायु सूर्यके घर्म-तापसे अन्तरिक्षमें श्वास - प्रश्वासकी क्रिया शरीरस्थ प्राणवत् करते हुए पृथिवी मण्डलकी कक्षाके दोष एवं मल मिश्रित वायुको ऊपर अन्तरिक्षमें शोधनार्थ फेंक देता है और ऊपरके शुद्ध वायुको नीचे पृथिवी मण्डलमें आकर्षित कर देता है।

वायु पवमान है

अन्तरिक्षके ऊपर या मध्यके क्षेत्रमें गया अशुद्ध वायु ऊपरके शुद्ध एवं शोधक पदार्थों, तत्वों और तापके प्रभावसे घर्षित, मिश्रित, विभाजित एवं सूक्ष्मावस्थाको प्राप्त कर, परिमार्जित होकर मल रहित और शुद्ध हो जाता है। इस प्रकार अशुद्ध वायुका एक शोधन कार्य पृथिवीस्थ वृक्षादिके अतिरिक्त अन्तरिक्षमें भी चलता रहता है और वायु पवित्र बनकर पृथिवी मण्डलमें बहते हुए या विचरण करते हुए सबको जीवन देती रहती है तथा सबको पवित्र करती रहती है। इसलिये वेदने इस वायुको पवमान अर्थात् बहनेवाला एवं पवित्र करनेवाला कहा है। शतपथ ब्राह्मणमें अयं वै पवित्रो योऽयं पवते - कहकर इस वायुको पवित्र-पवित्रकर्ता कहा है। अतः वायुके इन गुणोंके कारण वायुको विशेष क्रियाशील करके अन्तरिक्षके शोधनका कार्य सरलतासे हो सकता है।

अन्तरिक्ष शोधक जल

अन्तरिक्षको और अन्तरिक्षस्थ वायुको शुद्ध करनेवाला दूसरा पदार्थ जल है। सूर्यके ताप एवं पृथिवीकी ऊष्मासे जल बाष्परूप होकर वायुके आश्रयसे अन्तरिक्षस्थ मलोंको जो जलमें विलय हो सकते हैं उनको अपनेमें विलय कर लेता है तथा अन्य विलय न होनेवालोंको बहा ले जाता है। यजुर्वेद अ. ६ मं. १७ में कहा है— इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् - अर्थात् यह जल जो कुछ भी दोष और मल है उनको बहा ले जानेवाला दूर करनेवाला है। वे दोष या मल यदि शरीरके भीतर हैं तो शरीरके अन्दर जल ग्रहण करनेसे मूत्र एवं स्वेदादि द्वारा बहा ले जाते हैं। यदि शरीरके बाहर मलादि हैं तो मार्जन स्नानादि द्वारा बाहरके मलोंको दूर कर देते हैं। यदि पृथिवी पर मल दोषादि होगें तो वहां जलकी धाराके बहनेसे दूर हो जाते हैं और यदि अन्तरिक्षमें भी मल होंगे तो अन्तरिक्षस्थ सूक्ष्म जल मेघ, वर्षा आदिके द्वारा अन्तरिक्षको मलरहित और शोधित कर देते हैं। वेदने कहा— 'विश्वंहि रिप्रं प्रवहन्ति' (यजु. ४।२) जल सब प्रकारके दोषोंको दूर करनेवाले हैं अतः अन्तरिक्षके भी समस्त दोष इससे दूर होंगें।

वेदने इन दोनों पदार्थोंसे अदृष्ट दोष जो हमारे कर्मों, व्यवहारोंके कारण स्वतः जाने-अनजाने होते रहनेसे अन्तरिक्षको दूषित करते रहते हैं और परिणाम स्वरूप पाप स्थितिको उत्पन्न कर हमें दुःखदायी हो जाते हैं, उनसे मुक्ति पानेके लिये कहा कि— 'आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुंचतु' (यजु ६।१७) अर्थात् जल और वायु उन अदृष्ट दोषोंसे हमको दूर करें।

जल धातु संघात अर्थमें है। अर्थात् जलमें संघात, संघ, पिण्डीभूत बनने-बनानेकी सामर्थ्य है अतः जल अन्तरिक्षमें पहुंचकर वहां के मल, दोष, विषादिको अपनेमें आत्मसात या विलय करके उसकी विस्तृति, व्यापकता या फैलावको उत्तरोत्तर संकुचित एवं केन्द्रित करेगा और जब वह जल वर्षाके द्वारा पृथिवी पर बरसकर आयेगा तो अन्तरिक्षका वह केन्द्रित विषाक्त भाग पृथिवी पर और भी संकुचित, घनीभूत एवं केन्द्रित होकर उन विषोंके केन्द्रभूत पदार्थ एवं वनस्पतियोंकी ओर आकर्षित होकर और भी घनीभूत स्थितिको प्राप्त कर लेगा। अन्तरिक्षमें जो पदार्थ फैल जाता है। पृथिवी पर वह उससे आकुंचित अवस्था, घनीभूत स्थिति, मूल रूप एवं बीजात्मक स्वरूपको प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार जलसे अन्तरिक्ष शुद्ध और निर्विष होता रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों पदार्थोंका संचालक ताप

वायु और जल इन दोनोंको गतिशील और शोधनके लिये क्रियाशील करनेमें सूर्य ताप नियमित रूपसे प्रातः, मध्याह्न, सायं, अहोरात्र एवं ऋतुचक्रोंके विविध परिवर्तित तापके कारणोंसे विविध रूपसे विश्वको प्रभावित करता है। प्रकृति स्वाभाविक रूपसे उत्पन्न प्राणियोंके मलोंका शोधन करनेमें सक्षम रहती है। ऐसी स्थितिमें भी अपने द्वारा उत्पन्न मलोंसे दूषित वायुको शुद्ध और पुष्ट करनेकी आवश्यकता हमें नीरोग रहने एवं दीर्घ जीवनके लिये आवश्यक रहती है। वेद कहता है — अन्तरिक्षं शान्तिः- (यजु ३६।१७) अन्तरिक्ष हमारे लिये शान्त, क्षेम, निर्विष, सुख–कारक हो – इस कामनाके साथ मानवकृत प्रयत्नोंको भी करना होगा।

अन्तरिक्षमें अपवित्रताकी वृद्धि और प्राचीन उपाय – यज्ञ

यदि हमारे प्राकृत कमलोंसे दूषित अन्तरिक्षकी वायुको हम शुद्ध करनेका प्रयत्न न करें और उससे कई गुना अधिक मल कल – कारखानोंके इन्धनों, पेट्रोल, डीजल, गैस, सिगरेट, गोला बारूद आदि अनेक प्रकारसे उत्पन्न करके इस अन्तरिक्षको दूषित करेंगे तो अन्तरिक्षस्थ वायु जो प्राण एवं जीवनको देनेवाला हमारे लिये था वह अनेक प्रकारके मलों और विषोंसे मिश्रित होकर हमारे लि` घातक बनता जायगा। उत्तरोत्तर निरन्तर मलोंकी विशेष वृद्धिके परिणामस्वरूप आजके वैज्ञानिकोंका ध्यान अन्तरिक्ष शोधन पर गया है जब कि हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियोंने इसको परम कर्तव्य मानकर अन्तरिक्षस्थ वायुके शोधनके लिये नित्य प्रातः एवं सायंकाल अग्निमें कमसे कम १६ घृतकी आहुति देनेके लिये आदेश दिया है। यही परम विज्ञान है। – ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ओं भुवर्वायवे अपनाय स्वाहा – ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा – आदि आहुतियां पृथिवी, अन्तरिक्ष और आदित्य मण्डलके लिये तथा उनसे उत्पन्न होनेवाले प्राण, अपान और व्यानादिके लिये, इनकी शुद्धि, पुष्टि और समृद्धिके लिये ही हैं जिससे विश्वका जीवन समृद्ध हो और आयुकी वृद्धि हो। इसीलिये वेदमें यज्ञको – सा विश्वायुः (यजुः १।४) यह यज्ञ विश्वकी आयु है— सबको आयु देनेवाला है– यह कहा गया। यह इसीलिये वेदने कहा क्योंकि– वसोः पवित्रमसि – हे यज्ञ, तू पवित्र करनेवाला है – मातरिश्वनो घर्मोसि – तू वायुको शुद्ध करनेवाला है। – विश्वधा असि – (यजुः १।२) और विश्वका धारण करनेवाला भी है। अतः अन्तरिक्षको निर्विष एवं दोषरहित करके प्राणप्रद बनाये रखनेके लिये यज्ञ द्वारा मानवकृत प्रयत्नोंकी अत्यन्त आवश्यकता है।

पवित्रकर्ता यज्ञ

यज्ञकी प्रक्रिया ही हमारी वर्तमान समस्याका अन्तरिक्षको शोधित करनेका हल करनेवाली है। यजुर्वेद अ. १।३ में कहा है—

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।

अर्थात् – हे यज्ञ, तू सैकडों परिमित प्रकारोंसे इस समस्त विश्वको पवित्र करनेवाला है। केवल मात्र एक–दो या कतिपय सीमित प्रकारोंसे ही यह विश्वको पवित्र नहीं करता है – अपितु अनेक प्रकारसे क्रियाशील होता है। अतः अन्तरिक्षको, इस समस्त विश्वको शोधित करनेमें यह अवश्य समर्थ है। दूसरे वाक्यमें पुनः वेदने कहा है कि – हे यज्ञ ! तू सहस्रों प्रकारसे अर्थात् अपरिमित प्रकारसे इस समस्त विश्वको पवित्र एवं शुद्ध करता है। अतः वैदिक विज्ञानके अनुसार अन्तरिक्षको शुद्ध करनेका यही सर्वश्रेष्ठ प्रकार है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदचक्षु

(वराहमिहिर विशेषाङ्क)

वेद, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, भारतीय संस्कृति और
राष्ट्रीयतका अनुसन्धाता प्रचारक और प्रहरी वार्षिक

सम्पादक : केदारनाथ प्रभाकर

भारतविभूति, विश्वके महान् खगोलवेत्ता, आचार्य वराहमिहिरके जीवन, साहित्य, काल एवं उनके द्वारा भारतकी राजधानी दिल्लीमें सम्राट विक्रमादित्यकी संरक्षतामें निर्मित विश्वकी सर्वप्रथम भारतीय वेधशाला (जिसे भ्रांतिसे कुतुबमीनारके नामसे पुकारा जाता है) के सम्बंधमें दुर्लभ एवं खोजपूर्ण सामग्रीको भारतमें प्रथम बार 'वेदचक्षु' के 'वराहमिहिर विशेषाङ्क' में सचित्र प्रकाशित किया गया है। थोडी प्रतियां ही शेष बची हैं अतः आज ही अपनी प्रति सुरक्षित करा लेवें।

मूल्य एक प्रति : पांच रुपयें,

डाकव्यय रजिस्ट्री — रु. १-३५

कृपया धनादेश द्वारा अग्रिम भेजें, वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी।

प्रकाशक :

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसन्धान संस्थान

लक्ष्मी नगर, सहारनपुर. उ. प्र.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक : श्री शोभनाथ पाठक

' वैदिक वाङ्मयमें विमान '

भारतीय वैमानिक विद्या

अन्तरिक्ष युगमें प्रवेशकर नित नवीनतम उपलब्धियोंसे विज्ञानने संसारको आश्चर्यमें डाल दिया है। यदि अमेरिकी यान तीन यात्रियोंके साथ चन्द्रतल पर उतरकर मिट्टी ला सकता है तो, रुसी यान बिना आदमीकी जानको खतरेमें डाले ही यह करिश्मा दिखा सकता है और कम व्ययमें भी। इसी प्रकारकी उडानोंकी आज युगमें होड सी लगी हुई है। एक देश दूसरेको मात देनेमें जी-जानसे लगा हुआ है। हमारा देश भी इस ओर उन्मुख होनेमें प्रयत्नशील है। थूम्बा केन्द्र इसका ज्वलन्त प्रतीक है, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धरतीसे अन्तरिक्षमें उडने, वायुयानका निर्माण, अर्थात् वैमानिक प्रक्रियाका प्रथम प्रादुर्भाव भारतमें ही हुआ है और यहींकी प्रतिभासे प्रसूत, इस अमूल्य थातीको विश्वने अपनाया।

हमारे एक आत्मीयने मारीशससे एक पुस्तक तथा पत्र भेजा है। उसके माध्यमसे आपने हमें मार्गदर्शन दिया है कि भारतकी वैज्ञानिक प्रगति बेजोड है। सन् १९०३ में राइट बंधुओंने आकाशमें सर्व प्रथम वायुयान उडानेका श्रेय लिया जब कि इसके पूर्वही एक भारतीय श्री तलपदेने सन् १८९५ ई. में ही १५०० फुट उंचाई तक बम्बईकी चौपाटी पर वायुयान उडा दिया था। जिसकी पुष्टताके लिए उक्त पुस्तकका निम्न उद्धरण द्रष्टव्य है यथा—

"Shivkar Babuji Talpade constructed an aeroplane. With this plane this pioneer airman of modern India gave a thrilling demonstration flight on the Chowpatty beach in Bombay in the year 1895. The Machine attained a height at about 1500 feet and then automatically landed safely. The flight was witnessed among many others by the late Sir Sayajirao Gaikwar, Maharaja of Baroda and Justice Mahadeo Govind Ranade .... After Talpade's death ... his relatives sold the Machine to Rally Brothers a leading British exporting firm then operating in Bombay."

(The Arya Samaj Introduced ;
By. B. Bissoondoyal. Page 6)

श्री तलपदे सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्सके प्राध्यापक थे और एक कुशल वेदज्ञ थे। वेदोंके गंभीर अध्ययनसे उन्होंने वायुयानका निर्माण किया था। उनकी इस क्रियाकी प्रदर्शनी भी बम्बई आर्ट सोसायटीकी ओरसे लगाई गई थी। वेदर्षि स्व. श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजीने भी उक्त घटनाके सत्यताकी पुष्टि किया था। कहनेका तात्पर्य कि अकाट्य प्रमाणोंसे यह सिद्ध हो जाता है कि विश्वमें प्रथम वायुयान बनाने और उडानेका श्रेय एक भारतीय स्व. शिवकर बापुजी तलपदे को है न कि राइट बंधुओंको।

वेदोंमें वैज्ञानिक तथ्य पर्याप्त मात्रामें भरे पडे है पर आवश्यकता है तथ्यान्वेषणकी। वैमानिक प्रक्रिया व अंतरिक्ष यात्रा विषयक ज्ञानके तो वेद भण्डागार है। उक्त पुस्तकमें ही बताया गया है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

" ...... For the one hundred and ninetieth richa (verse) of the Rigveda and the aeronautical treatise of Bharadwaja mention that flying machines eame into full operation when the power of the Sun's rays, Mercury and another chemical called ' Naksharassa ' were blended together. This energy was, it seems, stored into something like an accumulator or storage batteries. The Vedas refer to eight different engines in the plane and Bharadwaja adds that they are worked by electricity. "

वही पुस्तक पृष्ठ ५ (वी. विष्णुदयाल, मारीशस)

ऋग्वेदकी इन ऋचाओंमें वैमानिक विधि स्पष्ट होती है। १।४६।३, १।११६।४-५, १।११७।१४, १।११८।४, १।११९।४, ६।६२।६, ७।६९।७, तथा अथर्ववेद ३।२।६ से वायु युद्धका आभास होता है। ऋग्वेदके १।११६ से तो यह स्पष्ट हो जाता है यथा—

" हे अश्विन ! जिस प्रकार मरा हुआ मनुष्य अपने सारे गौरव और महिमाको इस पृथ्वीपर छोड देता है, उसी प्रकार तुमने भुज्युको पानीमें फेंक दिया लेकिन तुम उसके उद्धारके लिए उत्तरदायी थे। तुम उसको वैमानिक सुरक्षा पेटिका द्वारा पुनः ले आये। वह वायुयान उड सका और पानी पर तैर भी सका। " इस वर्णनसे उस वैदिक युगकी वैमानिक प्रगतिका अनुमान लगाया जा सकता है।

ऋषि भरद्वाज कृत "यंत्रसर्वस्व" ग्रंथ भी उपलब्ध हुआ है जिसमें उक्त तथ्यों पर पूर्ण प्रकाश पडता है। इस ग्रंथमें ४० प्रकरण है जिसमें एक प्रकरण विमान विषयक है इसमें २५ प्रकारके विमानों यंत्रों, आदिका उल्लेख है। इनमें प्रमुख नाम ये हैं— सुन्दर विमान, त्रिपुर विमान, रुक्म विमान, शकुन विमान, जिनमें सीत्कारी यंत्र, शिरः कलिक यंत्र, वर्षोपसंहार यंत्र, त्रास्यवात निरसन यंत्र, आतपोसंहार यंत्र, रूपाकर्षण यंत्र, आदि तथा ३२ प्रकारके वैद्युतिक साधनोंका उल्लेख है। यही नहीं वरन् इनके पथोंका भी वर्णन है- जो पथ मण्डल, रेखापथ, कक्ष्य, शक्ति आदि नामोंसे सम्बोधित किये गये हैं। इसी प्रकारकी बहुत सी आधुनिकतम मशीनोंका उल्लेख उक्त ग्रंथमें है जिनका कार्य नवीनतम आविष्कारोंसे भी आश्चर्यजनक है। हवाई रक्षा, हवाई अड्डा, जेट, रेडियो मशीनगन, तथा अन्य ग्रहोंपर उडनेका विधान व उनका धरतीसे नियंत्रण आदि तथ्यान्वेषण करनेपर वे अनुपमेय उपलब्धियाँ संभव है जो पाश्चात्य नवीनतम आविष्कारोंको मात दे सकती है। पर नितान्त आवश्यकता है अपनी थातीको परखनेकी। पाश्चात्य वैज्ञानिक भी हमारी प्राचीनतम उपलब्धियोंका बखान करते करते नहीं अघाते देखिये Charch Wood महोदयने अपनी पुस्तक "Aerial warfare in Ancient India" में लिखा है— " ... aeroplanes were being used in India for Military as well as commercial purposes – everyday. In ancient India it was usual for a businessman of Kaling to go to Colombo daily after breakfast and return home for supper. "

—वही पुस्तक पृष्ठ ४

यही नहीं वरन् Col. Olcott ने १८८१ में इलाहाबाद आयोजित अपने भाषणमें कहा था कि—

" The ancient Hindu could navigate the air, and not only navigate it but fight battles in it like so many war eagles, combating for the domination of the clouds. To be so perfect in aeronautics they must have known all the arts and sciences relating to the science, including the strata and currents of the atmosphere, the relative temperature, humidity, density and specific gravity of the various gases ... "

—वही पुस्तक पृष्ठ ४

इस विवेचनसे स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल वैज्ञानिक गरिमासे कितना सम्पन्न था। तत्कालीन साहित्यमें इन विषयोंका कितना अपार ज्ञान था आंकना कठिन है। अंततः यहाँ हम संक्षिप्त रूपसे उसके बादके साहित्यमें भी कुछ तत्संबंधी जानकारी मनीषियोंके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। रामायण, महाभारत, पुराण आदिकी गरिमाका बखान इस क्षेत्रमें जितना किया जाय थोडा है। ई. पू. प्रथम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शताब्दीके कवि कालिदासकी कृतियोंका वैमानिक प्रकरण भी देखिये कितनी यथार्थतासे ओत प्रोत है यथा—

"अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदं
विमानेन विगाहमानः।
रत्नाकरं वीक्ष्य मिथः स जायां
रामाभिधानो हरिरित्युवाच।
(रघुवंश १३।१)

रघुवंशके १३ वे सर्गका वैमानिक वर्णन पाठकको चकित कर देता है कि कितनी यथार्थता दृश्यावलोकन की। इसी प्रकारका वर्णन शाकुन्तलके ७ वे अङ्कमें भी मातलि दुष्यन्तको लिए आकाशमार्गसे प्रवेश करता है। आकाश-मार्गसे उतरते समय पृथ्वी कैसी दिखाई पडती है यह वर्णन चन्द्रलोकसे उतर रहे यात्रियोंके वर्णनसे भी अधिक आकर्षक है। चन्द्रयात्रियोंको पृथ्वी कैसी दिखाई पडी थी, वह सब कालिदासके काव्यमें पढ लीजिये मानो कविकी स्वयं यह यात्रा हो। यही नहीं वरन् वैमानिक प्रकरणके लिए कुमारसंभव ९।३७, १३।३५, १४।३९, १६।११ आदि विशेष उल्लेखनीय है।

अब जरा ११ वी शताब्दी के धाराधीश महाराज, भोजकी वैज्ञानिक प्रतिभा परखिये। भोजकी विद्वत्ता, वीरता, समाजसेवा आदि तो बेजोड है ही वही उनकी वैज्ञानिक प्रतिभाका द्योतक "समरांगण सूत्रधार" उनकी लिखी पुस्तक एक अमूल्य थाती है। इस ग्रंथसे केवल वैमानिक विद्याका एक उदाहरण प्रस्तुत है यथा—

"लघुदारुमय महाविहंगम,
सुश्लिष्टं तन्तु विधायतस्था।
उदरे रसयंत्रमादधीत
ज्वलनाधारमधोस्यचाग्निपूर्णम्॥
तत्रारुढपुरुषस्तस्य
पक्ष-द्वन्दोच्याल प्रोज्झितेनालिनेन।
सुप्तस्यास्मित्यारहस्यास्य शक्त्या
चित्रन्कुर्वन्नम्बरेयाति दूरम्॥"

हलकी लकडी द्वारा एक बडासा पक्षी बना लिया जाय-जिसके जोड दृढतासे आबद्ध हो। इस पक्षी यानके पेटमें एक पारेका यंत्र लगा दिया जाय, जिसका सम्बन्ध नीचे विद्युतसे करदे। इस प्रकार पक्षी यान पर बैठकर चालक, पारेकी शक्तिसे कृत्रिम परोकी तेजीसे हिलनेके कारण वायुभेदन करता हुआ आकाशमें मडराने लगेगा तथा—

'इत्थमेव सुरमन्दिरतुल्यं
संचलत्यलघुदारु विमानम्।
आदधीत विधिना चतुरोन्तस्तस्य
पारदमृतान्हढकुम्भान्॥
अयः कपालाहितः मन्द वहने
प्रत्यतत्कुम्भुवागुणेना।
व्योम्नि झगित्याभरणत्वमेति
संतप्त गर्जद्रसराजशक्यता॥ (समरांगण सूत्रधार)

अर्थात् इस हलकी लकडीके द्वारा निर्मित मन्दिरके समान विशालकाय विमानको आकाशमें उडानेके लिए कुशल चालकको चाहिए कि पारेसे भरी हुई ४ टंकियां विमानमें स्थापित कर दे और उसका संबंध विद्युतसे कर दे। इस प्रकार बिजलीकी उष्णतासे पारेमें क्रिया उत्पन्न होगी और विमान 'झग' शब्द करता हुआ आकाशमें उड जायेगा। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी वैज्ञानिक थाती कितनी गरिमापूर्ण है पर आज हम अपनी इस थातीको न परखते हुए, पाश्चात्योंको इसीके बलपर पनपते हुए देख, श्रेय उन्हें ही देनेमें गौरव समझते है। अतः नितान्त आवश्यक है कि हम अपने वाङ्मयको परखे।

सत्कार - समालोचना

जीवन्मुक्त और विदेहमुक्त

लेखक— श्री रामतीर्थजी दण्डी स्वामी
प्रकाशक— श्री मुरारी लालात्मज राज (सोनी)
सोनियां मोहल्ला, पुराना बाजार, लुधियाना
मूल्य केवल रु. १. ५०

परम श्रद्धेय दण्डी स्वामी श्री रामतीर्थजी महाराज अध्यात्मवादी और बडे विद्वान् पुरुष है। उन्होंने अपने जीवनभर किये हुए साक्षात्कारों एवं अनुभवोंका इस पुस्तकमें साधारण जनताके लिये वर्णन किया है।

आत्माका स्वरूप, आत्मज्ञानका फल और उसका जीवन्मुक्त रूप फल इ. का अत्यंत सुगम और सुंदर शैलीमें इसमें वर्णन किया है।

सब वेदान्त ग्रंथोंका आधार लेकर अपने सिद्धान्तोंका प्रतिपादन किया गया है।

पूज्य स्वामीजीके इस मननीय, विचारशील पुस्तकको सब पढें और भारतीय अध्यात्मविद्या और वैदिक संस्कृतिका प्रभाव जगत्‌पर करें, ऐसी हम जनतासे प्रार्थना करते हैं। इससे जगत्‌में विश्वबन्धुत्वकी भावना निर्माण हो जायगी।

इस पुस्तकके लेखक पूज्य स्वामीजीको इस अमूल्य पुस्तकके लेखनके लिये हम अनन्त धन्यवाद देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक : वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी

विश्वकी वेद भक्त आर्य (हिन्दू) जनताका परम धर्म और परम कर्तव्य

महर्षि दयानंद वेद विश्व विद्यालयका निर्माण

विश्वके वेद भक्तजन वेद प्रचार सप्ताहके पावन प्रभातमें यह जानकर हर्ष विभोर हो उठेंगे कि भारतकी राजधानी नई दिल्लीमें महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय। महर्षि दयानन्द वेद विज्ञान भवन, चौरासी खरबोंकी संगम रमरकी यज्ञशाला, महर्षि दयानन्द धर्मवीर प. लेख राम अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, महर्षि दयानन्द आर्य कन्या गुरुकुल आदिका निर्माण होने जा रहा है।

महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालयकी आधार शिला

१९७२ की शिवरात्रिके पावन प्रभातमें चारों वेदों द्वारा यज्ञके अनुष्ठानके साथ महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालयकी आधार शिलाका शुभ आयोजन परमात्माकी महती अनुकम्पनसे होने जा रहा है।

इस स्वर्ण सुअवसरपर निम्नांकित महत्वपूर्ण महा सम्मेलनोंका आयोजन भी महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय निर्माण समिति सराय रुहेला नई दिल्लीके तत्वाधानमें होने जा रहा है।

१ विश्वशान्ति महा सम्मेलन इस सम्मेलनमें अणु और परमाणु बमोंके अविष्कारपर प्रतिबन्ध लगानेके लिये १२० राष्ट्र नायकोंसे हस्ताक्षर कराये जावेंगे।

इस महा यज्ञमें १२० राष्ट्रपतियोंको निमंत्रण पत्र विधिवत हिन्दी संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाके अनुवादके साथ भेजा जा रहा है।

२ विश्व चरित्र निर्माण सम्मेलन।

३ विश्व वैदिक कवि सम्मेलन। इस कवि सम्मेलनकी अध्यक्षताको सुशोभित करनेके लिये अजमेरके विश्व विख्यात वैदिक विद्वान् श्री पूज्य डा० सूर्यदेवजी शर्मा पी. एच. डी. डीलिटकी स्वीकृत सहर्ष प्राप्त हो गई है।

४ शुद्धि सम्मेलन इस सम्मेलनके अध्यक्ष कानपुर उत्तर प्रदेश भारतके सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्रीमान् देवीदासजी आर्य प्रधान आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुरकी स्वीकृत प्राप्त हो गई है।

५ संगीत सम्मेलन। इस सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिये सुप्रसिद्ध संगीताचार्य श्रीमान पन्नालालजी पियूष अजमेरकी स्वीकृती प्राप्त हो गई है।

६ विश्व वैदिक साहित्य सम्मेलन।

७ विश्वधर्म शिक्षा सम्मेलन।

८ चक्रवर्ती वैदिक राज्य विधान सम्मेलन।

९ यज्ञ सम्मेलन

इस सम्मेलनके अध्यक्ष आर्य गुरुकुल एटाके संस्थापक श्री पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी दन्डी होंगे।

१० विश्व योग सम्मेलन।

इस सम्मेलनके अध्यक्ष प्रो. बलदेव प्रसादजी आर्यकी स्वीकृत प्राप्त हो गई है।

११ विश्व संस्कृत भाषा सम्मेलन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ हिन्दी रक्षा सम्मेलन
१३ गो रक्षा सम्मेलन
१४ राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

इस सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिये राष्ट्र रक्षा मंत्रि श्री जगजीवन रामजीसे प्रार्थना की गई है।

१५ सर्व धर्म सम्मेलन। इस सम्मेलनके अध्यक्ष विश्व मानव केन्द्र देहरादूनके संस्थापक- सरवन आश्रम शचित नगर दिल्लीके अध्यक्ष विश्व धर्म संघके संस्थापक श्री पूज्य संत कृपाल सिंहजी महाराज होंगे।

१६ आर्य युवक सम्मेलन। इस सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिये पूज्य महाशय कृष्णजीके सुपुत्र श्रीमान विरेन्द्रजी एम. ए. मालिक वीर प्रताप जालन्धरसे प्रार्थना की गई है।

१७ विश्व आर्य महिला सम्मेलन:

१८ विश्व पत्र संपादक सम्मेलन। इस सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिये दैनिक मिलाप दिल्लीके संपादक श्री रणवीरजीसे प्रार्थना की गई है।

१९ शास्त्रार्थ महा सम्मेलन। इस सम्मेलनके अध्यक्ष शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामीजी महाराज उपाध्यक्ष वेद विश्वविद्यालय निर्माण समिति दिल्ली होंगे।

२० भाषण प्रतियोगिता सम्मेलन: इस सम्मेलनके अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय निर्माण समितिके अध्यक्ष एवं संस्थापक वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी मनोनीत किये गये हैं।

२१ विश्व दंगल कुश्ती सम्मेलन:

२२ आर्य महा सम्मेलन: इस महा सम्मेलनकी अध्यक्षताके लिये सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके अध्यक्ष पद्मभूषण श्रीमान डा. दुखन रामजीसे प्रार्थना की गई है।

२३ सस्वर वेद पाठ सम्मेलन: इस सम्मेलनके अध्यक्ष वेद विज्ञानाचार्य सस्वर वेदपाठी विश्वविख्यात वैदिक विद्वान् श्री पूज्य पं. वीरसेनजी वेदश्रमी, वेद सदन महारानी मार्ग इन्दोर होंगे।

आवश्यक नोट

महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय एवं वेद विज्ञान भवन आदिके निर्माण पर १० करोड रुपयोंका व्यय होगा। इसके साथ ही चारों वेदों द्वारा यज्ञके परमपुनीत अनुष्ठान एवं विविध उपरोक्त सम्मेलनोंके सफल करानेपर अनुमानत: दस लाख रुपयोंका व्यय होगा।

इन उपरोक्त सम्मेलनों और यज्ञ आदिके सारे ही कार्यक्रमोंकी एक ऐतिहासिक अभूतपूर्व अनुपम अलौकिक हिय हर्षक जीवनप्रद एक फिल्म चलचित्र तैयार किया जायेगा जिसके द्वारा जगतभरमें वैदिक विचारधाराका पावन गंगाका प्रबल प्रवाह प्रवाहित किया जायेगा।

आकाशवाणी और टेलीविजन पर एवं विश्वभरके समाचार पत्रोंमेंभी यह कार्यक्रम प्रसारित करानेकी व्यवस्था हो रही है।

विश्वकी वेदभक्त जनतासे करबद्ध प्रार्थना

इस आयोजनको सफल बनाकर महर्षि दयानन्दजी महाराजके कृण्वन्तो विश्वमार्यम्के उद्घोषको सभी नर नारी सार्थक बनावे।

तन मन और धनसे आज ही सहायता भेजकर सहायक बने। एक लाखसे दस हजार तकके दान दाताओंके नाम पतेके साथ उन दानवीरोंके शुभ नाम श्री वेद विश्व विद्यालयके प्रांगणमें शहीदोंके दसमंजिल १०० गज वर्ग गोलाकार सचित्र संगमरमरके कृति स्तूप पर चित्र अंकित किये जायेंगे। एक हजारसे लेकर दस हजार तक सभी दान दाता गण आजीवन संरक्षक रहेंगे।

५०१) के दानदाता आजीवन प्रतिष्ठित संरक्षक रहेंगें।

१०१) तकके दानदाता आजीवन सहायक सदस्य माने जायेंगे।

एक सौ एक रुपये तकके दानदाताओंके शुभ नाम सधन्यवाद नाम और पते के साथ संगमरमर पर अंकित किये जायेंगे।

१०१) भेजकर यज्ञके यजमानोंमें और सहायक सदस्योंमें नाम अपना अंकित कराकर वेद विश्वविद्यालय निर्माण समितिकी रसीदें आप प्राप्त कर लें।

धनसंग्रह समितियां

देश और विदेशोंकी समस्त आर्य समाजीसे प्रार्थना है कि इन योजनाओंकी सफलताके लिए अपने नगरोंमें धन संग्रह समितियोंको तत्काल निर्माण कर रसीद बुके महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय निर्माण समितिसे मगवा लें।

१०१ भेजकर स्वागतकारिणी समितिके सदस्य बने।

आप अपना चैक, डालर, पौण्ड, ड्राफ्ट, मनी ऑर्डर आजही "कोषाध्यक्ष महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय निर्माण समिति, सराय रुहेला, नई दिल्ली-५" के पतेसे भेजे।

यज्ञके लिये घृत, हवन सामग्री चन्दन, गुगुल, अन्न, वस्त्र, चीनी मेवे आदि आजही भेजना आरम्भ कर दे।

वेद प्रचार सप्ताह पर बढ चढ कर दिल खोलकर महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय एवं चतुर्थ ब्रह्म पारायण महायज्ञके लिये दान प्रदान करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निवेदक

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी, व्याख्यान भूषण।
अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय निर्माण समिति, महाता ठाकुरदास सराय रुहेला, नई दिल्ली-५

उपाध्यक्ष : देवप्रकाश शास्त्री, सदस्य नगर निगम राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

कार्यकारी प्रधान : डॉ. मदन मोहन चोपडा।

मंत्री : डॉ. देव प्रकाश पातंजल शास्त्री, एम. ए., पी. एच. डी.

डॉ. सूर्य देव शर्मा, एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट्. अजमेर

डॉ. श्रुतीशील शर्मा शास्त्री, तर्क शिरोमणि, एम. ए., पी. एच. डी. ज्योर्ज टाउन साउथ अमेरिका
मोती तोरल मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मारिशस

संरक्षक

श्री पूज्य महात्मा संत कृपाल सिहजी महाराज, सावन आश्रम शक्ति नगर दिल्ली, श्री पूज्य महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज, अध्यक्ष विश्व आर्य सन्यासी मन्डल दिल्ली।

श्री पूज्य महा मंडलेश्वर वेद दर्शनाचार्य स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज, गंगेश्वरधाम दिल्ली। श्री मान लाला हंसराजजी गुप्त महावीर, दिल्ली। श्री मान विजय-कुमारजी मल्होत्रा, मुख्य कार्यकारी पार्षद दिल्ली।

आवश्यक निवेदन

विश्वके वेदभक्त जनता यह जानकर प्रमुदित होगी कि धर्मवीर ग्रन्थमालाके अनुपम ग्रन्थ रत्नों एवं शिक्षा प्रचारोंकी बिक्रीसे महर्षि दयानन्द वेद विश्वविद्यालय निर्माण कार्यके लिये एक करोड एक लाख एक हजार एक सौ ग्यारह रुपयोंका दान श्रद्धा सहित प्रदान करनेका संकल्प है।

एक लाख रुपया आर्य कन्या गुरुकुल महर्षि दयानन्द धाम नरसूपुर मधुबन आजमगढको एवं एक लाख रुपया महर्षि दयानन्द शारदा उपदेशक महाविद्यालय अजमेरके लिये परोपकारिणी सभा अजमेरको दान प्रदान करनेका शुभ संकल्प किया गया है। विश्वके वेदभक्त जनतासे प्रार्थना है कि २१ रु. भेजकर धर्मवीर ग्रन्थमाला के पूरे सेट और चार्टोंको खरीद कर दान प्रदान करनेमें परम सहायक बने। संकल्प बल और मानव जीवन नामक साहित्य सुमनका मूल्य सजिल्द तीन रुपया प्रति है। इस ग्रन्थ पर तीन हजार रुपयाका पारितोषिक प्राप्त हो गया है। दिल्ली राज्य शिक्षा बोर्डने इस पुस्तकको स्वीकृत कर रजिस्टर्ड न० दे दिया है। पुस्तक चार्ट एवं हवन सामग्री आजही इस पत्तेसे मंगवाये।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी, अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला, सराय रुहेला नई दिल्ली ५

दैवत-संहिता

सम्पादक— म. म. पं. श्री. दा. सातवलेकर

वेदोंमें पूजक ऋषियोंकी अपेक्षा पूजनीय देवोंकी प्रधानता है। क्योंकि उपासककी अपेक्षा उपास्यकी मुख्यता सर्वत्र होती है। उपासक उपास्यके गुणोंको अपने अन्दर लाकर तद्वत् बनना चाहता है। वेदोंमें भी ऋषि उपासक हैं और देवता उपास्य। ऋषिगण अल्पगुणान्वित हैं और देवता सर्वगुणान्वित। ऋषिगण देवताओंके गुण अपने अन्दर धारण करना चाहते हैं और देवसदृश बनना चाहते हैं। इस प्रकार देवोंका स्थान मुख्य है।

ये देवता संस्थामें अनेक हैं, पर उनके मन्त्र चारों वेदोंमें बिखरे पडे हैं। अग्निके कुछ मन्त्र ऋग्वेदके १ मण्डलके १ सूक्तमें आए हैं, तो कुछ मन्त्र उसके २४ वें सूक्तमें आए हैं। इसी प्रकार इन्द्रादि देवोंके मन्त्रोंकी भी अवस्था है।

इस संहितामें देवताओंके अनुसार चारों वेदोंका मन्त्रसंग्रह है। इन्द्रके चारों वेदोंमें जितने मन्त्र आए हैं, उन सबका एक जगह संग्रह कर दिया है। इसी प्रकार अन्य देवोंका भी किया है। इससे वेदका अध्ययन करनेवालोंको बडी सुविधा होगी। उन्हें चारों वेदोंको खरीदनेकी कोई आवश्यकता नहीं। १७ पृष्ठोंमें उत्कृष्ट भूमिका युक्त आकर्षक छपाई, आकर्षक जिल्द। डबलक्राऊन ८ पेजी साइज, भूमिका १७ पृष्ठ, १०४८ पृष्ठ मूल्य ३०) (डा. व्य. पृथक्)

मन्त्री— स्वाध्याय-मण्डल, पो. 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)' पारडी, [जि. बलसाड]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक : श्री रामपालसिंह तेवतिया, एम्. ए., एल्. टी., सिद्धांतशास्त्री

गणित-फलित ज्योतिष मीमांसा

ज्योतिष-शास्त्र विषयके अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र और महत्वको ध्यानमें रखते हुए इसकी मीमांसा की जाती है। संभवतः उक्त विषयक विद्वानोंके लिए कुछ लाभप्रद सिद्ध हो सके। वैदिक अर्थात् वैज्ञानिक ज्योतिष-शास्त्रकी आदिकालसेही दो शाखाएं हैं- प्रथम फलित, द्वितीय गणित। वदिककालमें भारतीय ऋषियोंने देखा कि कालकी तीन प्राकृतिक इकाइयां हैं- (१) दिन (२) मास (३) वर्ष— अर्थात् (१) दिन अर्थात् सूर्यके कारण अहोरात्रकी उत्पत्ति (२) मास अर्थात् चन्द्रमाके कारण चान्द्र मास तथा शुक्ल-कृष्णकी उत्पत्ति (३) वर्ष अर्थात् सूर्यके कारण सौर वर्ष तथा उत्तरायण-दक्षिणायन और जाडे, गर्मी व वर्षा, आदि ऋतुओंकी उत्पत्ति। उक्त प्राकृतिक समयकी इकाइयां जो सूर्यकी सापेक्ष गति और चन्द्रमा तथा पृथिवीकी निर्पेक्ष गतियोंके कारण प्रतिफलित होती हैं फलित ज्योतिषके अन्तर्गत हैं। उक्त प्राकृतिक दृश्योंके कारणोंको ऋषियोंने जबसे खोजना प्रारंभ किया तबसे ही गणित ज्योतिषका प्रारंभ हुआ। इस प्रकार फलित ज्योतिषका प्रारंभ स्वयमेव गणित ज्योतिषसे कुछ पहलेसे प्रारंभ हुआ समझना चाहिए।

आजकल गणित ज्योतिषकी अनेक शाखाएं हैं जो सब सत्यपर आधारित हैं यथा वर्णनात्मक ज्योतिष, गतिक ज्योतिष, भौतिक ज्योतिष, गोलिय ज्योतिष इत्यादि। फलित ज्योतिषकी भी अनेक शाखाएं मानी जाती हैं जो प्रायः कल्पित हैं और असत्य पर आधारित हैं। फलित ज्योतिषकी केवल एक शाखा जो प्राकृतिक फलित ज्योतिष है प्रत्यक्ष और सत्य है जो वैदिक, अर्थात् वैज्ञानिक है क्यों कि यह सत्यपर आधारित है। जैसे अमावस्याको सूर्यग्रहण पडनेकी संभावना व पूर्णमासीको चन्द्र ग्रहण पडनेकी संभावना आदि प्राकृतिक फलित दृश्य हैं। इसी प्रकार सूर्यके द्रष्ट उत्तरायण दक्षिणायन होनेपर जाडे-गर्मीकी ऋतुएं प्रतिफलित हैं।

पृथिवी और चन्द्रमाकी गतियों तथा चन्द्रमाके उत्तरीय-दक्षिणीय पातों (क्रमशः राहु-केतु) की वक्रीगतिके कारण नियमित रूपसे सूर्य और चन्द्रग्रहणोंके दृश्योंका प्रतिफलित होना। यही फलित ज्योतिष् है। जाडे-गर्मी-वर्षा आदिकी ऋतुओंके कारण तथा पूर्णिमाका चन्द्रप्रकाश व अमावस्याका अन्धकार आदिके कारण जो मानवीय जीवनमें उनके कार्य व्यवहारोंमें जो सुविधा वा असुविधाएं आती हैं वेही शुभ वा अशुभ फल हैं। इससे अन्येतर और कुछ फल नहीं। इसके अतिरिक्त पौराणिक राहु केतुकी कथा आदि तथा भाग्यवादी फलित ज्योतिष तथा उसकी भविष्य वाणियां आदि अवैदिकों अर्थात् अवैज्ञानिकोंकी कल्पित पाखण्ड युक्त बातें हैं, जो असत्यपर आधारित होनेसे अमान्य और त्याज्य हैं। इसी प्रकार भारतीय साप्ताहिक दिनोंके नाम सूर्यादि ग्रहोंके नामों पर आधारित रविवार आदि नामोंको, एक सुनिश्चित नियमानुसार रखा गया है परन्तु यह नियम कृत्रिम है पर सप्ताह संज्ञक इकाई एक मनोवैज्ञानिक सुविधा है। उक्त साप्ताहिक दिनोंको शुभाशुभ मानना पाखाण्ड है। पर मानव जीवनमें कालकी इन दैनिक इकाईयोंकी महत्वपूर्ण उपयोगिता स्पष्ट है।

इसी प्रकार अश्विनी आदि वैदिक नक्षत्रोंकी आकृतिके और उनके वैदिक नामोंके आधारपर मेषादि संज्ञक राशियों-पर आधारित निरयण संक्रान्तियां भी सार्थक और मान्य हैं क्योंकि इनकी वैदिक अर्थात् वैज्ञानिक प्राकृतिक महत्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और उपयोगिता है। किन्तु इनका शुभाशुभ फल कुछ भी नहीं है। अन्य प्रकारसे आजकाल मानीजानेवाली कृत्रिम मेषादि संज्ञक सायन संक्रान्तियां भी सार्थक और मान्य हैं क्योंकि इनकी भी वैज्ञानिक और प्राकृतिक आतंब महत्ता और उपयोगिता है विशेषकर दोनों सांपातिक तथा उत्तरायण-दक्षिणायन संक्रान्तियां क्यों कि इन पर ऋतुएं आधारित हैं। मेरे विचारानुसार उपरोक्त प्रकार से गणित-फलित ज्योतिष मीमांसा उपादेय है।

मनुष्यको उसके स्वकृत पुण्य-पापरूपी कर्मों द्वाराही शुभाशुभ फल मिलता है अथवा उसके प्रारब्ध कर्मही उसका भाग्य हैं। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। इसमें प्राकृतिक घटनाओंका कोई शुभ-अशुभ हाथ नहीं होता। प्राकृतिक घटनाएं सबके लिए समान ही शुभाशुभ होती हैं। व्यक्ति विशेषके लिए उनका कुछ फलाफल नहीं। इस प्रकार गणित ज्योतिषके नियमानुसार जो प्राकृतिक घटनाएं घटित वा प्रतिफलित होती हैं वेही फलित ज्योतिषके फलादेश हैं अन्येतर कुछ फल नहीं॥ इत्यलम्॥

यदि आप जानना चाहते हैं कि—

(१) प्राचीन भारतकी राज्यव्यवस्था कैसी थी ?

(२) उस समयकी समाजव्यवस्था कैसी थी ?

(३) उस समयकी अर्थव्यवस्था कैसी थी ?

तो अवश्य पढिये—

यदि आप राजनीतिज्ञ हैं, तो "राज्यव्यवस्था" का अध्ययन आपको अवश्य करना चाहिए।

यदि आप समाजसुधारक हैं तो "समाजव्यवस्था" आपको अवश्य देखनी चाहिए।

यदि आप अर्थशास्त्री हैं तो "अर्थव्यवस्था" पर अपनी नजर अवश्य रखनी पडेगी।

और यदि आप अधिकारी हैं तो "प्रजाव्यवस्था" पर आपको ध्यान रखना पडेगा।

पर ये समस्यायें अब आपके लिए समस्यायें ही नहीं रह गई हैं। क्योंकि इन सबका समाधान आपको—

चाणक्य सूत्राणि

में मिल सकता है। सुप्रसिद्ध टीकाकार श्री रामावतारजी विद्याभास्कर की सुबोध एवं सरल हिन्दी टीकासे ६९० पृष्ठसंख्यावाले इस महान् और अमूल्य ग्रंथकी कीमत सिर्फ १८) (डा. व्य. पृथक्) है। शीघ्रता कीजिए आज ही मंगवाए।

मन्त्री— स्वाध्याय-मण्डल, पोस्ट- 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)', पारडी [जि. बलसाड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इससे शौचशुद्धि होनेमें सहायता होती है, अपानवायुकी निम्नगति होती है और इस कारण मलावरोध दूर होता है। यह आसन थोडा जलपान करके करनेसे लाभ विशेष होता है। शौचशुद्धि करनेके कारण आंतोंके अनेक रोगोंका नाश इससे होता है।

विशेष लाभके लिये दस पंद्रह मिनिटतक इसको करना आवश्यक है। किंचिन्मात्र करनेसे वैसा लाभ होनेकी इच्छा करना व्यर्थ है। इस आसनसे बडी देरतक जलमें रहना संभव होता है, क्योंकि मनुष्य इस आसनमें रहनेतक डूबता नहीं। जिस समय तैरकर मनुष्य थक गया हो, उस समय जलमें ही इस आसनको करके जलपर स्थिर हो जाय, तो १०।१५ मिनिटोंमें उसको फिर तैरनेका बल आजाता है। इसलिये इसको मत्स्य का आसन बोलते हैं।

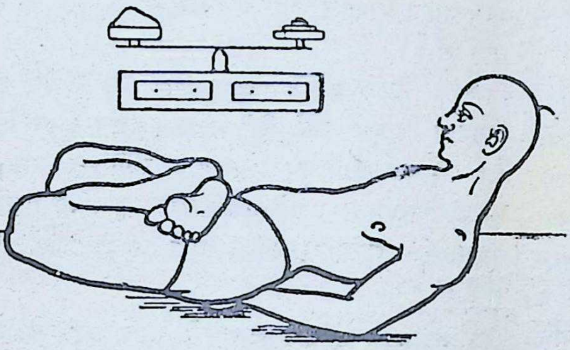

(२४) तोलांगुलासन।

पूर्वोक्त प्रकार पद्मासन करके चूतरोंके नीचे हाथकी मुष्टियां धर कर उन मुष्टियोंपर तराजूके समान सब शरीरका तोल संभालनेसे यह आसन बनता है। इस समय भी ठोडी कंठमूलमें लगानेसे बडा लाभ हो सकता है।

(२५) बद्ध पद्मासन।

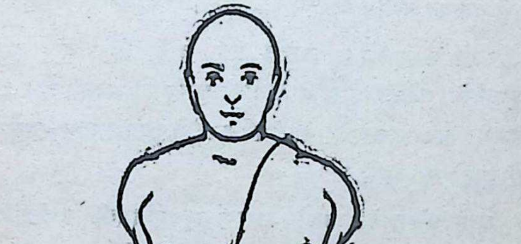

दाहिना पांव बाईं जंघापर और बायां पांव दाहिनी जंघापर ऐसी रीतिसे रखना कि उनकी एडियें पेटके नीचेके भागको सटके बैठें। पश्चात दोनों हाथ पीछे फेरके दाहिने पांवका अंगुठा दाएं हाथके और बाएं पांवका अंगूठा दूसरे हाथके तर्जनी और दो अंगुलियोंकी चुटकीमें पकडना, फिर ठोढी हृदयमें लगाके दबाना, नंतर नासिकाके अग्रभागपर दृष्टि स्थिर करनी, इसको " बद्ध पद्मासन " कहते हैं।

इस आसनसे अनेक व्याधियोंका नाश होता है। विशेषतः पेटके संबंधकी बहुतसी व्याधियां इस आसनके करनेसे दूर होती हैं। पेटका फुलना, बदहजमी, अपचनके अनेक दोष, पेटका दर्द, परिणामशूल, आमवात, कब्जी-बद्धकोष्ठता, खट्टे ढकार आदि सब इसके करने से दूर होते हैं। परंतु केवल मिनिट दो मिनिट करनेसे उत्तम लाभ प्राप्त करनेकी इच्छा करना व्यर्थ है। कमसे कम आधा घंटा इस आसनपर स्थिर बैठनेका अभ्यास करना चाहिये। तब गुणका अनुभव होने लगता है। घंटा डेढ घंटातक बैठनेसे और भी अधिक लाभ होते हैं। इस प्रकार प्रतिदिन तीनचार वार छे मास तक अभ्यास करनेसे स्थिर रूपसे आरोग्य प्राप्त होता है।

इस आसनसे कमरके स्नायु, तथा पांवकी नस नाडियां निर्मल हो जाती हैं, इसलिये वहां आरोग्य प्राप्त होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारंवार पीठको दबाकर बैठनेके कारण पृष्ठवंशके मेरुदंडमें टेढापन आजाता है, वह इससे दूर हो जाता है और उसमें सरलता अथवा समता आती है। इसलिये पृष्ठवंशका मज्जा-प्रवाह इस आसनके करनेसे ठीक होता है अर्थात् मज्जातंतुके रोग इस आसनसे क्रमशः दूर होते हैं। पृष्ठवंशके टेढेपनके कारण मनुष्यमें असंख्य बीमारियां होती हैं। गुदासे लेकर मस्तकके विविध भागोंमें इस मज्जातंतुओंके बिगड जानेसे विविध बीमारियां होना संभव होता है। इस लिये सब अवस्थाओंमें सब आयुवाले लोगोंको यह आसन लाभदायक होता है।

कई मनुष्योंके हाथ पीछेसे पांवके अंगुठोंतक पहुंचतेही नहीं, इसका कारण इतना ही है कि उनकी नस नाडियां अशुद्ध रहती हैं। बारंवार प्रयत्न करनेपर एक मासमें पांवके अंगुठे पीछेसे हाथमें आने लगते हैं। तब तक उनको एक हाथसेही पीठकी ओरसे एक पांवका अंगूठा पकडनेका यत्न करना चाहिये। एक हाथसे जो अंगूठा पकडना है व दाये हाथसे दाहिने पांवका और बांये हाथसे बांये पांवका ही अंगुठा पीठकी ओरसे पकडना चाहिये। इस प्रकार केवल एक हाथसे एक पांवका अंगुठा पीछेसे पकडनेसे "अर्ध-बद्ध पद्मासन" होता है। यद्यपि इससे कुछ विशेष लाभ नहीं होता है तथापि तैय्यारी की दृष्टिसे इतना करना लाभदायी ही है। अर्ध-बद्ध-पद्मासन करना हो तो क्रमशः दोनों ओरका अवश्य हेरफेरसे करना चाहिये। तथा पूर्णबद्ध-पद्मासनभी पांवों और हाथोंके हेरफेरसे करना चाहिये। इस प्रकार करनेसे ही योग्य लाभ पहुंचता है।

इस आसनमें बैठकर गुदा और शिश्नस्थानकी नस नाडियोंका ऊर्ध्व आकर्षण करनेसे वीर्यदोष दूर हो जाते हैं। श्वास और उच्छ्वास की सम प्रमाणमें परंतु मंदगति करनेसे फेंफडोंका बल बढता है। इस समवृत्ति प्राणायाममें श्वास और उच्छ्वास दीर्घ, मंद और सम होने चाहिये। इस समय श्वासोच्छ्वासकी गति अंकों या मंत्रोंके जपसे माप सकते हैं। इस समवृत्ति प्राणायामपर मन स्थिर करनेसे चित्त एकाग्र करना सुगम हो जाता है।

बद्ध पद्मासनके साथ समवृत्ति प्राणायाम करनेसे प्राथमिक अवस्थाका क्षयरोग, पांडुरोग, पेटकी अशक्तता तथा दवाइयोंसे ठीक न होनेवाले निस्याजीर्ण जैसे रोग भी छः मासमें ठीक होते हैं। इस विषयमें कई रोगियोंपर अनुभव लिया है इसलिये निर्भर होकर यहां लिखा है। परंतु जिन रोगियोंपर यह प्रयोग किया वे प्रतिदिन तीन चार बार और प्रतिसमय एक आध घंटा इस आसनका अभ्यास किया करते थे। क्षयरोगीके फेफडोंमें क्षयके क्रिमी भी डाक्टरी परीक्षासे निश्चित् हुए थे, परंतु योग्य पथ्यके साथ उक्त आसन करनेसे प्रथम उनका पेट सुधर गया, और पश्चात् अन्य दोष भी दूर होते गये। शुद्ध वायु सेवन, सात्विक लघुभोजन, तथा अन्य आहार व्यवहार भी योगशास्त्रके अनुसार ही रखा गया था।

बहुत दिनके ज्वरके पश्चात् तिल्ली बढती और यकृत् बिगडता है। इस दोषके लिये यह बद्ध पद्मासन उत्तमोत्तम है। यदि खानपानके पथ्यके साथ ये रोगी इस आसनको करें तो निःसंदेह गुण आवेगा। रोगकी न्यूनाधिक तीव्रताके अनुसार गुण आनेमें न्यूनाधिक समय लग जाना स्वाभाविक ही है।

भोजन करते ही इस आसनको करना नहीं चाहिये। ऐसा होनेसे पचनके कार्यमें बाधा होती है। खाली पेट रहनेकी अवस्थामें करना ही अच्छा है। भोजनके बाद तीन घंटेके पश्चात् करनेमें कोई दोष नहीं है। विशेषतः रोगीको इस बातका ख्याल अवश्य रखना चाहिये।

ठोडी कंठमूलमें न लगाते हुए दाईं और बाईं ओर घुमानेसे गलेकी नस नाडियोंकी शुद्धि हो सकती है। इस समय सब प्रकारके कंठबंध करनेसे कंठस्थानका आरोग्य सिद्ध हो सकता है।

श्वास अंदर ले जानेके समय मूलस्थानकी नाडियोंका ऊर्ध्व आकर्षण करना तथा श्वास बाहर छोडनेके समय पेटको अंदर ले जाना तथा नाभिस्थानके सूर्य चक्रपर मनका संयम करनेसे पेटका आरोग्य शीघ्र प्राप्त होनेका अनुभव है। नाभिके किंचित् ऊपर सूर्यचक्र है। उच्छ्वासके समय पेट जब अंदर जाता है तब उसपर दबाव आता है और उसकी शक्ति बढ जाती है। मनद्वारा उक्त क्रिया करनेसे अधिक लाभ होता है।

इस समय ठोडी कंठमूलमें दबाकर लगानेसे कंठस्थानके निकंठमणिकी शुद्धता होती है और उसके द्वारा रक्तशुद्धि होनेसे अपूर्व आरोग्य मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२६) बकासन ।

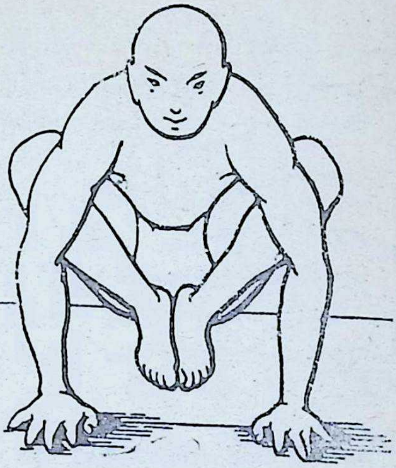

दोनों हाथोंके पंजे जमीनपर रखकर, अपने दोनों घुटनोंको अपने बाहुओंको सहारे ऊपर उठाकर, पांवोंसमेत सब शरीर ऊपर उठाइये । केवल हाथोंके पंजे जमीनपर रहें और शेष शरीर ऊपर अंतरालमें रहे । इसको 'बकासन' कहते हैं ।

घुटनोंको अंदर रखकर भी यही आसन करनेका दूसरा प्रकार है । तथा एक घुटना अंदर और एक बाहर, इस प्रकार हेरफेरसे भी यह आसन किया जाता है । सब शरीर केवल हाथोंके पंजोंपर रहना चाहिये, यह बात इसमें मुख्य है । इससे हाथोंमें बल आता है ।

(२७) लोलासन ।

बकासनके अनुसार दोनों पंजोंको जमीनपर रखकर केवल उनपरही सब शरीरको संभालकर ऊपर उठानेसे लोलासन होता है । बकासनमें पांवोंका झुकना पीछे की ओर होता है और इसमें आगेकी ओर होता है । दोनोंका फल समान ही है । इसका दूसरा नाम "तोलासन" भी है ।

(२८) मयूरासन ।

जिस प्रकार मोर पत्थर पर बैठता और अपनी पुच्छको नीचे करता है उस प्रकार मेजके सहारे अपने दो हाथ रखिये और कोहनियां नाभिस्थानमें लगाकर उनपर सब शरीरका बोझ संभाल कीजिये । इसको मयूरासन कहते हैं । इससे पचन शक्ति बढती है और हाथोंमें बल आता है । मयूरासनका दूसरा प्रकार यह है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२९) मयूरासन और (३०) हंसासन

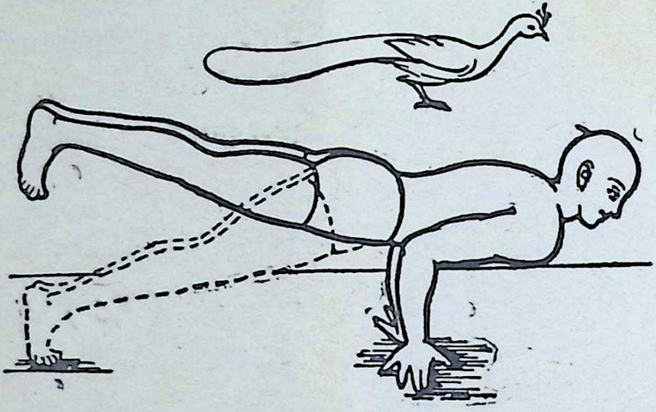

अपने दोनों पंजे जमीनपर रखिये और कोहनियाँ नाभिके दोनों ओर आसपास लगाइये और बकासन के समान अपने पांवोंके समेत शरीरको ऊपर अंतराळमें उठाइये । इस प्रकार करके किंचित समय स्थिर रहिये। पश्चात् छाती और मुखको किंचित् आगे झुकाइये, छाती और मुख आगे झुकते ही आपही आप पांव पीछे चले जायंगे । पश्चात् पांवोंको पीछे और सिरको आगे अच्छी प्रकार करके, शरीरको दंडवत् सीधा करके अपने कोहनियोंपरही संभालकर रहिये, इसको मयूरासन कहते हैं ।

पांव जमीनको लगे रहनेसे हंसासन बनता है । हंसासनकी अपेक्षा मयूरासनका फल अधिक है ।

इससे जठराग्नि प्रदीप्त होता है, भूख बहुत लगती है, शौच शुद्धि होती है । बस्तिविधि करनेके बाद यह आसन करनेसे उत्तम परिणाम होते हैं । गुल्म, उदर आदि रोगोंको दूर करनेके लिये यह बडा उपयोगी है। वात पित्त आदिकोंके दोषोंका शमन इससे होता है । अति भोजन, बुरा अन्न अथवा कदन्न भी खाया हो तो इससे भस्म हो जाता है । तात्पर्य यह उदरसंबंधी रोगोंको दूर करता है । तथापि भोजन विषयक अपथ्य न करना ही उत्तम है । यह आसन शरीरके आरोग्यके लिये अति उत्तम है । अभ्यास अधिक करनेसे अच्छा लाभ होता है ।

(३१) सर्पासन ।

पट सोके कमरसे नीचेका भाग पांव समेत भूमिपर टिकाके तुंदीके पास दोनों हाथोंके तलवे भूमिपर टिका देने, फिर छातीसे माथेतकका भाग सांपके फनके जैसा ऊपर उठा रक्खें । इसको " सर्पासन, भुजंगासन अथवा नागासन " कहते हैं । इससे भूख बढती है, जठराग्निकी तीव्रता होती है, मंदाग्निसे होनेवाले सब रोग इसके अभ्याससेदूर होते हैं ।

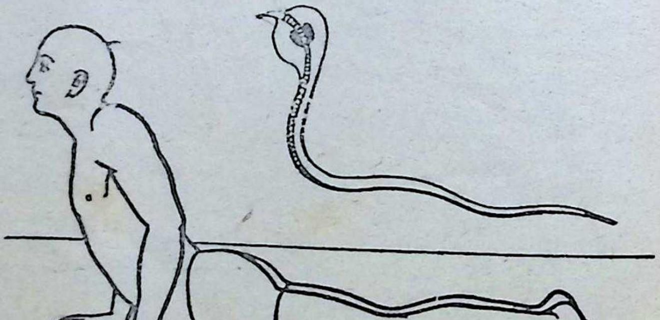

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीर्य रक्षाके लिये

भुजङ्गासन (सर्पासन)।

(ले०— श्री० पं प्रियरत्न विद्यार्थी)

यह सर्पासन चिकित्सा सम्बन्धी आसनोंमें वीर्यरक्षणके लिये एक मुख्य आसन है अर्थात् यदि मेरे बताए अकेले इस सर्पासनको ही निरन्तर दोनों समय करें तो 'स्वप्नदोष' रोग सर्वथा नष्ट हो जावे। विधि यह है कि भूमिपर औन्धा लेट जावे और दोनों हाथ, हनु [ठोडी], छाती, उपस्थेन्द्रिय, दोनों जानु [घुटने], दोनों पैरोंके पंजे भूमिको स्पर्श करें या यों समझिये कि शरीरका भार इन नव अङ्गोंपर होना चाहिये। " एडी मिली हों हाथ स्कन्धोंके पास रखें हों फिर ठोडीको भूमिसे ऊपर उठावे और शनैः शनैः जहां तक आगेके अङ्गोंको भूमिसे ऊपर उठा सकें उठावें; प्रत्युत हाथोंपर भार न पडने पावे, ऐसा करते हुए एक आभ्यन्तर वृत्ति प्राणायाम [श्वासको भीतर रोकना] करें यह भुजङ्गासनका प्रथम प्रकार है फिर देखो...

[२] इसके अनन्तर पूर्ववत् नवाङ्ग लेटे हुए दोनों हाथ पृष्ठके ऊपर मिलाकर रखें एवं पूर्ववत् आभ्यन्तर प्राणायाम करें और हनुसे लेकर अङ्गको जितना ऊपर उठा सकें शनैः शनैः उठावें, प्रथम प्रकारमें और इसमें भेद इतना ही है कि हाथोंको पृष्ठके ऊपर मिलाकर रखना और सब पूर्वके समान है।

[३] इसके पश्चात् प्रथम प्रकारका भुजङ्गासन करके दोनों जानु (घुटने) भी ऊपर उठा लेवें फिर प्रथम प्रकारके समान सब कुछ करें। प्रथम और इस तृतीय प्रकारमें भेद इतना ही है कि इसमें दोनों जानु ऊपर उठाने होते हैं।

[४] तत्पश्चात् द्वितीय प्रकारके समान दोनों हाथ ऊपर उठाकर पृष्ठ पर मिला दें सब तृतीय प्रकार और चतुर्थ प्रकारमें केवल इतनाही अन्तर है और सब समान है।

एवं इस प्रकारका भुजङ्गासन जो चार प्राणायामोंमें होगा जिसमें पांच मिनिटके लगभग लगेंगी सायं प्रातः दोनों समय जो कोई इसका अनुष्ठान करेगा, चाहे वह पुरुष अन्य चिकित्सा सम्बन्धी आसनोंको न भी करे पर अतिशीघ्र स्वप्नदोष रोगसे मुक्ति पावेगा। कुछ दिवस इसी अकेलेको करते हुए अभ्यासानुभवसे परीक्षा कर देखें।

(३२) शलभासन।

शलभका नाम भाषामें टिड्डो है। इसके आकारके समान अपना आकार बनानेके लिये जमीनपर पेटके बल सोकर नाभिके दोनों ओर दोनों हाथ रखिये और नाभिके चारों ओरका चार अंगुलका भाग भूमिपर रखकर शेष शरीर अर्थात् छाती सिर और पांव ऊपर उठाइये। शलभ जैसा आकार बन जायगा। इसीका नाम " शलभासन " है। इससे घंजा, पेट, बाहु आदि भागोंको लाभ पहुंचता है।

(३३) आकर्णधनुषासन

दोनों पांव एक दूसरेके साथ सीधे जमीनपर फैलाकर बैठ जाइये। दोनों हाथोंकी अंगुलियोंसे दोनों पांवोंके अंगूठे पकड लीजिये। पश्चात् एक पांव सीधा ही रखकर दूसरे पांवको उठाकर दूसरी ओरके कानको लगाइये। जिस प्रकार धनुष्य पर बाण चढाकर आकर्ण खींचा जाता है, उसी प्रकार इस आसनमें होता है इसलिये इसको " आकर्ण धनुषासन " कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूसरी ओर भी इसीप्रकार करना चाहिये। हाथों और पांवोंके हेरफेरसे य ह्नासन चार प्रकारसे किया जा सकता है।

(१) दाहिने हाथसे दाहिने पांवका अंगुठा पकडकर, बांये पांवका अंगूठा बांये हाथसे खींचकर बांये कानको लगाना, (२) बांये हाथसे बांए पांवका अंगूठा पकडकर दाहिने पांवका अंगूठा दाहिने हाथसे खींचकर दाहिने कानको लगाना, (३) दाहिने हाथसे बांये पांवका अंगूठा पकडकर दाहिने पांवका अंगूठा बांये हाथसे खींचकर बांये कानको लगाना, (४) बांये हाथसे दाहिने पांवका अंगूठा पकडकर बांये पांवका अंगूठा दाहिने हाथसे खींचकर दाहिने कानको लगाना, ये चार प्रकार हैं। इनसे बाहु, पांव, घुटने, जंघा आदि अवयवोंको लाभ पहुंचता है।

(३४) चक्रासन।

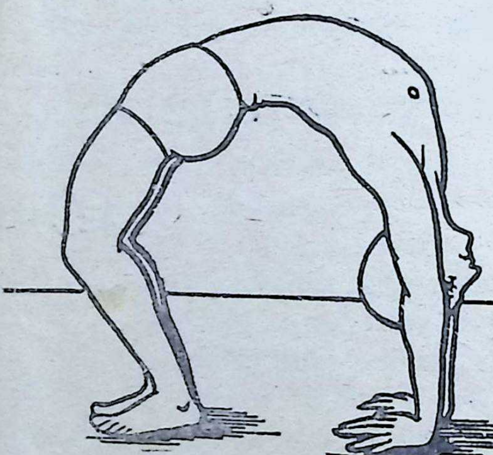

पीठके ऊपर भूमिपर सो जाइये। पश्चात् हाथों और पांवोंके पंजे भूमिपर लगाकर कमरका भाग ऊपर उठाइये। और हाथों और पांवोंके पंजे जितने पास पास आसकेंगे, उतने पास करनेका यत्न कीजिये। सब शरीर चक्रके समान बनता है इस कारण इसको 'चक्रासन' कहते हैं। यह आसन खडा रहकर पीछेसे अपने हाथोंको जमीनपर रखनेसे भी होता है। इसको भाषामें 'कमान करना' बोलते हैं। इससे पेट और कमरके स्थानोंको बडा लाभ पहुंचता है। पृष्ठवंश हमेशा आगेकी ओर झुकता है, इसका दोष इस आसनद्वारा विरुद्ध झुकाव होनेसे दूर होता है।

(३५) वज्रासन और
(३६) सुप्तवज्रासन।

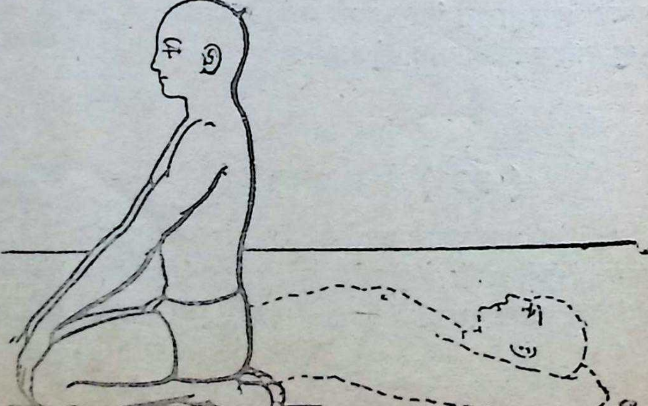

दोनों जांघें और दोनों पींडरीयां इनको ऊपर नीचे बराबर करके दोनों पांवोंके तलवोंको गुदाके दोनों ओर बराबर बैठाकर बैठना, इसका नाम 'वज्रासन' है।

घुटने निचले भागसे पांवकी अंगुलियोंतकका भाग भूमिको लगाना चाहिये। इसका दूसरा प्रकार यह है कि अंगुलियां भूमिपर टिकाके एडियों पर चूतर रखकर बैठना, परंतु इससे वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इष्ट कार्य नहीं होता है कि, जो पूर्व लिखे प्रकारसे होता है। इसलिये घुटनेसे अंगुलियोंतकका पांवका भाग जमीनको लगाकर बैठना ही उत्तम है।

इसका तीसरा प्रकार यह है कि, एडियां अलग करके चूतर जमीनको लगाकर बैठना।

किसी प्रकार वज्रासन लगाकर पश्चात् उसी वज्रासनके साथ पीठपर सोना, और अपने हाथोंसे एकसे दूसरे हाथका बाहु पकड कर हाथोंके ऊपर सिर रखना, इसको "सुप्तवज्रासन" कहते हैं।

पांवों और पेटपर इसका अच्छा परिणाम होता है। इस समय ठोडी कंठमूलमें बंटके लगानेसे बहुत ही लाभ होता है। इस आसनके करनेके समय इस बातको कोई न भूलें।

(३७) उष्ट्रासन।

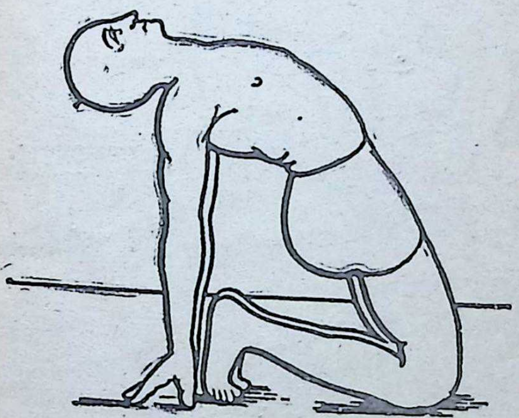

पूर्वोक्त वज्रासनके द्वितीय प्रकारके समान एडियोंपर चूतर लगाकर बैठिये। पश्चात् हाथ पावोंके साथ साथ अथवा पावोंकी एडियोंपर रखकर एडियोंपरसे चूतरोंको उठाकर आगे कीजिये और सिरको पीछे और नीचे झुकाइये। इस समय एडी और चूतरोंके बीचमें जितना अधिक अंतर होसके उतना उत्तम है। इस आसनसे पेटको बहुत लाभ पहुँचता है।

पेट जमीनको लगाकर भूमिपर सीधा सोकर पीछेसे अपने हाथोंसे पावोंको–एडीके नीचे पकड लीजिये। अब नाभिके आसपासका चार अंगुल तकका पेटका भाग ही केवल भूमिपर रखकर, सब शरीरको ऊपर कीजिये। हाथोंसे पांवोंको अपनी ओर अच्छी प्रकार खींच लीजिये और पांवोंसे हाथोंको अच्छी प्रकार खींच लीजिये। इस प्रकार दोनों ओरका खिंचाव होनेसे "सुप्त उष्ट्रासन" बनता है। इसको "धनुरासन" भी कहते हैं।

पूर्वोक्त उष्ट्रासनमें घुटने और पांवकी अंगुलियां जमीनपर स्पर्श कर रहीं थीं, तथा हाथका भी एक रीतिसे भूमिको स्पर्श हो रहा था। परंतु इस सुप्त उष्ट्रासनमें केवल नाभिका थोडासा भाग ही भूमिको स्पर्श करता है और शेष सब शरीर ऊपर खींचा होता है। दोनोंका आकार एक जैसा ही होता है, एकमें ऊंट बैठनेका भास होता है और दूसरेमें सोनेका भास होता है। दोनोंका फल एकसाही है।

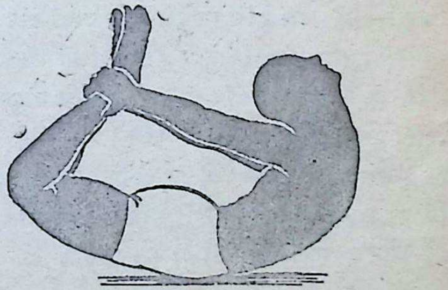

इसके अभ्याससे यकृत और प्लीहाके दोष दूर होते हैं, आमवातके सब रोग चले जाते हैं तात्पर्य पेटके आरोग्यके लिये यह अति उपयोगी आसन है।

उष्ट्रासनका और एक प्रकार— पेट पर सोके दोनों पांव घुटनोंसे उलटके पीठकी ओर लाने, दोनों हाथोंसे दोनों पांवोंके अंगूठे पकडने और कंधे भूमिपर लगाके माथा ऊपर करना, इसको भी उष्ट्रासन कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३८) गोमुखासन।

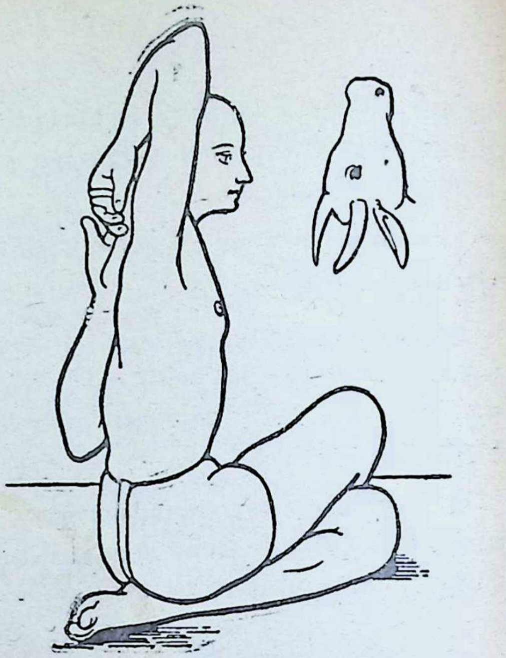

दाहिने पांवकी गांठ बाएं चूतरके नीचे और बाएं पांवकी गांठ दाहिने चूतरके नीचे रखके तनके बैठना, और बायां हाथ पीछे फेरके ऊंचा उठाना, तथा दाहिने हाथकी कोहनी ऊंची करके हाथ नीचे झुकाना। तत्पश्चात् दाहिनी तर्जनीसें बायें हाथकी तर्जनी दृढ पकडनी। इसको गोमुखासन कहते हैं। हाथोंके तथा पांवोंको हेरफेरसे यह आसन दोनों ओर करना उत्तम है। इससे हाथों और छातीको लाभ पहुंचता है। यह आसन खडा होकर भी केवल हाथों द्वारा हो सकता है।

(३९) प्राणासन।

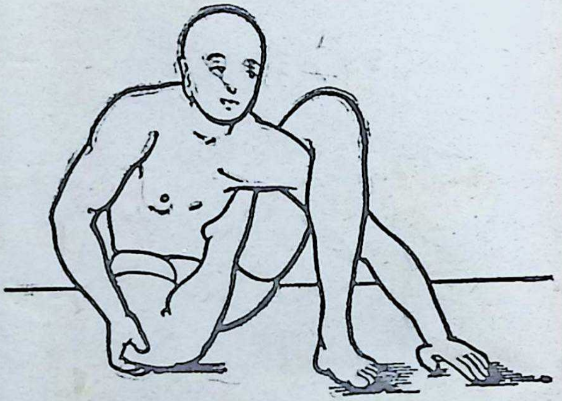

दाहिने पांवकी अंगुलियाँ बायी जंघा और बगलमें दबाकर बैठिये और बांये घुटनेके नीचे बायां बाहु रखकर बायां हाथ और पांव जमीनपर बलसे रखिये। इस समय बाहुसे घुटनेको ऊपर खींचना और घुटनेसे बाहुको नीचे दबाना चाहिये। इस प्रकार करनेसे हाथ और पांवका बल बढता है। फेंफडोंमें खिंचाव होनेके कारण प्राणका भी बल बढ जाता है। हाथ पांवके हेरफेरसे यह आसन दाईं बाईं ओर दो प्रकारसे किया जा सकता है।

(४०) चतुरकोणासन।

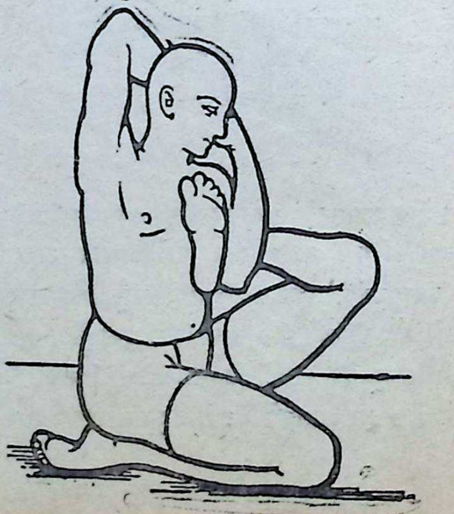

दक्षिण पादको घुटनेसें मोडके बैठना और पश्चात् बाएं पांवके पंजेको बांये हाथकी ठेऊनीसें धरके ऊपर उठाना, पश्चात् सिर परसे दोनों हाथोंकी अंगुलियां परस्पर मिलाकर पांवको सिरके बल ऊपर उठानेसे "चतुरकोणासन" बनता है। यह दूसरी ओर भी करना चाहिये।

इससे पांवके स्नायु ठीक हो जाते हैं तथा हाथ और गलेके स्नायुओंको भी अच्छा खींचाव होनेके कारण निर्मलता प्राप्त होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२११ अयं रुजानः अ-रुचः अरोचयत्— (१६०) यह वीर स्वयं प्रकाशित होकर अप्रकाशितोंको प्रकाशित करता है।

२१२ ऋचसे अपः ओषधीः अविषा वनानि गाः अर्वतः नॄन् रिरीहि— (१६१) उपासकको जल, अन्न, निर्विष फलवाले वृक्ष, गाय, घोडे, बल, बच्चे और अनुयायी मनुष्य दो।

२१३ अहेळमानः यज्ञं उप याहि— (१६७) क्रोधरहित होकर प्रसन्न मनसे यज्ञमें सम्मिलित होना चाहिए।

२१४ गिरः तुरस्य राधसः पातिं— (१८४) उत्तम वाणियां या प्रशंसाके बोल शीघ्रतासे कार्य करनेवाले उत्साहको बढाते हैं।

२१५ अस्यं तं इत् शुष्मं देवी रोदसी सपर्यतः नु —(३८४) ऐसे वीरके बलकी सेवा द्यु और पृथ्वी निश्चयसे करते है।

२१६ ऋतस्य पथि वेधाः अपायि— (१८७) सत्यके मार्गमें रहकर ज्ञानी मनुष्य अन्न प्राप्त करता है। वह अन्यायके मार्गसे कभी नहीं जाता।

२१७ देवासः मनांसि श्रिये अक्रन्— (१८७) ज्ञानी जन अपने मनोंको आनन्दित करनेके लिए शुभ कर्म करते हैं।

२१८ दात्रे इत् वयं अभूम— १८९ दाताके पास हम सदा रहें।

२१९ प्रदिवः कारुधायाः— (१९१) इन्द्र प्राचीन कालसे कारीगरोंको धारण करनेवाला है।

२२० अपां तोकस्य तनयस्य जेषे नः सूरीन् अघं कृणुहि— (३९७) हमें धन मिलें, बालबच्चोंकी जय हो, हम विद्वान् हों और हमें समृद्धि प्राप्त हो।

२२१ स्वस्य अशिवस्य पितुः आयुधानि मायाः अमुष्णात्— (४०१) देव सोमने अपने अभद्र काम करनेवाले पिताके शस्त्रास्त्रोंको और मायाओंको नष्ट किया।

२२२ अस्य प्रणीतयः महीः— (४०६) इस ईश्वरकी संचालक शक्तियां बहुत हैं।

२२३ अस्य प्रशस्तयः पूर्वीः— (४०६) इसकी प्रशंसायें सनातन कालसे चली आ रही हैं।

२२४ अस्य ऊतयः न क्षीयन्ते— (४०६) इसकी रक्षाके साधन भी कभी कम नहीं होते।

२२५ पृतनाषहः वीरस्य हस्तयोः विश्वानि वसूनि — (४०६) शत्रु सैनिकोंका पराभव करनेवाले वीरके हाथोंमें सब प्रकारके धन रहते हैं।

२२६ धीभिः धनं जेष्म— (४१५) बुद्धियोंका उपयोग करके हम धन जीतें।

२२७ रक्षो हत्याय गभस्त्योः वज्रं धीष्व— (४२१) राक्षसोंके विनाशके लिए हाथमें शस्त्र धारण करना चाहिए।

२२८ अन्धसः तन्वा— (४३०) मनुष्य अन्नसे पुष्ट बने हुए शरीरसे युक्त हो।

२२९ द्रवत् भद्रा सहस्रिणी रातिः सद्यः दानाय मंहते— (४३५) प्रभुकी शीघ्रतासे कल्याण करनेवाली हजारों प्रकारकी दानशक्ति तत्काल ही सहाय्यार्थ तत्पर रहती हैं।

२३० सुवीर्यस्य पतयः स्याम्— (४६२) हम उत्तम सामर्थ्यके स्वामी बनें।

२३१ यज्ञियस्य सुमतौ स्याम— (४६१) हम पूजनीय पुरुषकी उत्तम बुद्धिके अनुकूल व्यवहार करें।

२३२ भद्रे सौमनसे अपि स्याम— (४६१) हमारा मन उत्तम और कल्याणकारी हो।

२३३ रूपं रूपं प्रति रूपः बभूव— (४६८) प्रत्येक रूपमें उसी प्रभुका रूप है।

२३४ इन्द्रः मायाभिः पुरुरूप ईयते— (४६८) प्रभु अपनी अनन्त शक्तियोंसे अनेकरूप बनता है।

२३५ अगव्यूति क्षेत्रं आ अगन्म, उर्वी सती भूमिः अंहूरणा अभूत्— (४७०) गायोंसे रहित क्षेत्रमें जब हम जाए तो हमें वहांकी पृथ्वी विस्तीर्ण होनेपर भी शत्रुओंके युद्धक्षेत्रके समान प्रतीत हुई। गायोसे रहित प्रदेश विस्तीर्ण होते हुए भी उजाड उजाडसे प्रतीत होते हैं।

२३६ गो-इष्टौ प्रचिकित्स— (४७०) गायोंके प्राप्त होने पर उनकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए और उनकी अच्छी चिकित्सा करनी चाहिए।

२३७ वृषा अजरः महान् अर्चिषा विभाति— (४८४) बलवान्, जरारहित और जो महान् होता है, वह तेजसे प्रकाशित होता है। (निर्बल और जराग्रस्त कभी भी तेजस्वी नहीं हो सकता)

२३८ महान् देवान् यजसि— (४८५) स्वयं महान् होकर ज्ञानियोंका सत्कार करना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२३९ नव्यसा वचः सवर्दुघां धेनुं आ— (४९२) नवीन और कोमल शब्दोंसे दुधारु गायको बुलाना चाहिए। गायको कठोर शब्दोंसे नहीं बुलाना चाहिए। इसे कठोर शब्दोंसे बुलाने पर गायपर बुरा परिणाम होता है।

२४० श्रवः अमृत्यु— (४९१) दूध मृत्युको दूर करनेवाला है।

२४१ सुम्नैः एव यावरी— (४९३) गाय सुखोंसे युक्त होकर संचार करती है अर्थात् गायें जिन प्रदेशोंमें संचार करती हैं, वे प्रदेश सदा सुखमय होते हैं।

२४२ वनस्पतिं मा उद् वृहः— (४९८) वनस्पति अर्थात् वृक्षादिको न उखाडा जाए।

२४३ सख्यं अवृकं अस्तु— (४९९) मित्रता कुटिलता रहित हो।

२४४ मर्त्यैः परः असि— (५००) सबका पोषक देव मनुष्योंकी अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ है।

२४५ श्रिया देवैः समः— (५००) सम्पत्तिमें अन्य देवोंके समान है!

२४६ सः पूषा नः शुरुधः चन्द्राग्रा रासत्— (५११) वह पूषा हमें शोकको दूर करनेवाली और आनन्द देनेवाली वाणियां दें।

२४७ आपः मानुषीः— (५२५) जल मनुष्योंका हित करनेवाले हैं।

२४८ मातृतमाः भिषजः स्थ— (५२५) ये जल माताओंसे भी अधिक प्रेमसे रोग दूर करनेवाले हैं।

२४९ सूरः मर्तेषु ऋतु वृजिना च पश्यन् अभि चष्टे— (५३५) वह सूर्य इस विश्वमें सरलता और कुटिलताको देखता हुआ प्रकाशित होता है।

२५० अर्यः एवान्— (५३५) वही सच्चा शासक है।

२५१ अन्यकृतः एनं मा भुजेम— (५४०) दूसरोंका किया हुआ पाप हमें न भोगना पडे।

२५२ यत् चयध्वे तत् मा कर्म— (५४०) जिसके लिए तुम दण्ड देते हो, वैसा कर्म हम न करें।

२५३ अतियाजस्य यष्टा नि हीयताम्— (५५०) अविधिपूर्वक कर्म करनेवाला विनष्ट हो जावे।

२५४ यः ब्रह्म अति मन्यते, निनित्सात्, तस्मै तपूंषि वृजिनानि सन्तु— (५५१) जो ज्ञानसे द्वेष करे और ज्ञानकी निन्दा करे, उसको ज्वालायें जलानेवाली हों।

२५५ ब्रह्मद्विषं द्यौः अभि शोचतु— (५५१) इस ज्ञानसे द्वेष करनेवालेको यह द्युलोक संतप्त करे।

२५६ ब्रह्मणः गोपां आहुः —(५५२) सोमको ज्ञानका रक्षक कहते हैं।

२५७ ब्रह्मद्विषे तपुषे हेतिं अस्य — (५५२) ज्ञानसे द्वेष करनेवालेको अच्छा दण्ड देना चाहिए।

२५८ विश्वदानीं सुमनसः स्याम— (५५४) हम सदा मनमें उत्तम विचार रखें।

२५९ अमृतस्य सूनवः – (५५८) मनुष्य अमर ईश्वरके पुत्र हैं।

२६० ऋतावृधः देवः— (५५९) सत्यमार्गकी वृद्धि करनेवाले ही देव कहलाते हैं।

२६१ परिचक्ष्याणि वचांसि मा वोचं— (५६१) निन्दाके भाषण मैं कभी न करूं।

२६२ वामं गृहपतिं अभिनय— (५६८) प्रशंसनीय गृहस्थीके पास ही हम जाएं।

२६३ आदित्सन्तं दानाय चोदय— (५६९) दान न देनेवाले मनुष्यको दान देनेके लिए प्रेरित कर।

२६४ पणेः मनः वि म्रद— (५६९) व्यापार करनेवाले बनियेके मनको जरा नरम कर।

२६५ पणीनां हृदया आरया परितृन्धि— (५७१) कंजूसोंके हृदयोंको आरोंसे काट।

२६६ आरया पणेः वि तुद— (५७२) आरेसे पणिको काट।

२६७ हृदि प्रियं इच्छ— (५७२) हृदयमें सबका भला करनेकी इच्छा करनी चाहिए।

२६८ यः इदं एव इति ब्रवत्— (५७७) "जो यह ऐसाही है" इस प्रकार सच बोलता है, वही सच्चा मनुष्य है।

२६९ धीवतः सखा— (५९८) बुद्धिपूर्वक कार्य करनेवालेका यह पूषा देव मित्र है।

२७० देवनिदः प्रजां विश्वस्य मायिनः प्रजां निबर्हय— (६१६) हे देवी सरस्वती! ईश्वरकी निन्दा करनेवालोंका तथा सब कपटी लोगोंका तू नाश कर।

२७१ अपसा श्रुधीयतः जनान् महित्वा चित् संयतः— (६९५) कर्म करके जो श्रेयस प्राप्त करनेके इच्छुक है, उन्हें मित्र और वरुण ये दोनों देव उत्तम कर्मकी तरफ प्रेरित करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२७२ दूभशः अदब्धासः अमूरः— (६९७) दूत किसीसे भी न दबनेवाले और चतुर हों।

२७३ अवाताः युवतयः न मृष्यन्ते— (६९९) अविवाहित तरुणियां अपना अकेलापन सहन नहीं कर पातीं।

२७४ जिह्वया सदं इदं सुमेधा आ— (७००) जिह्वासे ऐसा उपदेश करना चाहिए कि जिसे सुननेवाले उत्तम बुद्धिमान् बनें।

२७५ यत् सत्यः अरतिः ऋते आभूत्— (७००) जब देवोंका सत्यभक्त सदाचारी होता है, तब उसकी बुद्धि बढती है।

२७६ तत् महित्वं यत् दाशुषे अंहः विचयिष्ठं— (७००) यह देवोंका ही महत्व है कि वे दाताको निष्पाप बनाते है।

२७७ वां प्रियं धाम प्र स्फूर्धन् युवधिता मिनन्ति, न देवासः, न मर्ताः, न अप्यः पुत्राः— (७०१) हे देवो ! जो आपके प्रिय स्थानसे ईर्ष्या करते हैं, और आपके नियमोंको तोडते हैं, वे निश्चयसे न देव हैं, न मनुष्य हैं और कर्मकुशल पुत्र ही हैं।

२७८ यत् गावः अनुस्फुरान् छर्दिषः अभिष्टिः— (७०३) जिस घरके चारों ओर गायें घूमती हों, ऐसा घर चाहिए।

२७९ ऋजिष्यं धृष्णुं— (७०३) सरल व्यवहार करनेवाले मनुष्य जहां रहते हों, ऐसा घर हमें चाहिए।

२८० यत् रणे वृषणं युनजन्— (७०३) जो घर युद्धमें बलवान् तरुणको भेज सकता हो, ऐसा घर चाहिए। प्रत्येक घरमें ऐसे तरुण तैयार रहें कि जो समय पडनेपर युद्धमें जा सके।

२८१ यज्ञः महः इषे, महे सुम्नाय आववर्तत्— (७०४) यज्ञ बहुत अन्न प्राप्त करनेके लिए और अतिशय सुख प्राप्त होनेके लिए हो।

२८२ देवताता श्रेष्ठाः शूराणां शविष्ठा, मघोनां मंहिष्ठा— (७०५) देवोंमें यज्ञ करनेवाले श्रेष्ठ हैं, शूरवीरोंमें बलवान् श्रेष्ठ हैं, और धनिकोंमें उत्तम दान देनेवाले श्रेष्ठ हैं।

२८३ तुतुरिः द्युम्नी सद्यः प्र तिरते— (७१०) शीघ्रतासे कार्य करनेवाला अपने तेजसे शत्रुओंको पार करता है।

२८४ धर्मणः परि प्रजाभिः जायते— (७२५) जो धर्ममार्ग पर चलता है, वह सन्तानोंसे युक्त होता है।

२८५ या नः गयं आ विवेश, अमीवा विषूचीं विवृहतं— (७७४) जो हमारे घरमें प्रविष्ट हुए हैं, वे सबके सब रोग हमसे दूर हों।

२८६ यत् एनः कृतं, अस्मत् अवस्यतं मुंचतं— (७४५) जो हमने पाप किया हो, वह हमसे दूर हो।

×

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ॐ

ऋग्वेदका सुबोध भाष्य

षष्ठ मंडल

ऋषिवार सूक्त संख्या

ऋषि	संख्या
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	५९
सुहोत्रो भारद्वाजः	२
शुनहोत्रो भारद्वाजः	२
नरो भारद्वाजः	२
शंयुर्बार्हस्पत्यः	४
गर्गो भारद्वाजः	१
ऋजिश्वा भारद्वाजः	४
पायुर्भारद्वाजः	१
	७५

ऋषिवार मंत्र संख्या

ऋषि मंत्र	संख्या
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	५२९
शंयुर्बार्हस्पत्यः	९३
ऋजिश्वा भारद्वाजः	४३
गर्गो भारद्वाजः	३१
पायुर्भारद्वाजः	१९
सुहोत्रो भारद्वाजः	१०
शुनहोत्रो भारद्वाजः	१०
नरो भारद्वाजः	१०
	७६५

देवतावार मंत्र संख्या

देवता मंत्र	संख्या
इन्द्रः	२७९
अग्निः	१६२
विश्वे देवाः	६५
पूषा	४०
इन्द्राग्नी	२५
अश्विनौ	२२
वैश्वानरोऽग्निः	२१
मरुतः	१८
सरस्वती	१४
उषाः	१२
इन्द्रावरुणौ	११
मित्रावरुणौ	११
इन्द्राविष्णू	८
गावः	८
इन्द्रापूषणौ	६
द्यावापृथिवी	६
सविता	६
इन्द्रासोमौ	५
सोमः	५
इषवः	४
रथः	४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमारुद्रौ	४
सार्ञ्जयः प्रस्तोकः	४
वृबुस्तक्षा	३
बृहस्पतिः	३
दुन्दुभिः	२
दुन्दुभीन्द्रौ	१
अश्वाः	१
आर्त्नी	१
इषुधिः	१
ज्या	१
देवब्रह्माणि	१
देवभूमिबृहस्पतीन्द्राः	१
द्यावाभूमी पृश्निर्वा	१
धनुः	१
प्रतोदः	१
ब्राह्मणपितृसोमद्यावापृथिवी पूषाणः	१
युद्धभूमिकवचब्रह्मणस्पत्यादयः	१
रथगोपाः	१
वर्म	१
वर्मसोमवरुणाः	१
सारथिरश्मयः	१
हस्तघ्नः	१
	७६५

इस प्रकार इस मंडलमें ऋषि और देवताओंकी संख्या है। इस मंडलमें मानवजीवनके लिए उपयोगी जो उपदेश मंत्रों द्वारा दिए गए हैं, उन्हें हम अब देखें।

प्रभुके विश्वमें आनन्द

मनुष्यके लिए प्रभु परोक्ष है, वह प्रभुका साक्षात् दर्शन इन आंखोंसे नहीं कर सकता। वह तो मनकी आंखोंसे ही देखा जा सकता है, पर वह भी सर्वसाधारण मनुष्योंके वशकी बात नहीं। लाखों, करोडोंमें ही एक ऐसा व्यक्ति निकलता है कि जो योगके द्वारा अपने मनकी आंखोंको खोलकर उस परम प्रभुका साक्षात् दर्शन किया करता है। पर उसका बनाया हुआ विश्व सभी देख और जान सकते हैं। जब मनुष्य कुछ जानने योग्य होता है तो वह सूर्यको उदय और अस्त होता हुआ, नदियोंको अनवरत बहता हुआ, तारोंको झिलमिल करता हुआ देखता है, तब इस संसारके सौन्दर्यसे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। सारे संसारमें उसे आनन्द ही आनन्द प्रतीत होता है। वस्तुतः है भी यह विश्व आनन्दसे भरपूर। इस विषयमें ऋषि भरद्वाज कहते हैं—

१ ते भद्रायां सन्दृष्टौ रणयन्त— (४) प्रभुके कल्याणकारी विश्वके सौन्दर्यमें हम आनन्द प्राप्त करते रहें।

ऋषि भरद्वाजके इस कथनसे उन अवैदिक सिद्धान्तोंकी, कि जो संसारको कारागार, बंधनरूप और हेय समझते हैं, असत्यता सिद्ध हो जाती है। जो इस विश्वको अकल्याणकारी, बन्धनकारक, माया, आदि समझते और लोगोंको इस संसारको छोडकर मुक्ति या निर्वाणकी तरफ प्रवृत्त होनेका उपदेश करते हैं, वे सत्यतासे बहुत दूर हैं। यह विश्व तो कल्याणकारी है। मुक्ति या निर्वाण प्राप्त करनेसे पूर्व उन्हें भी इसी संसारमें आना पडता है। महात्मा बुद्ध, महावीर आदि जितने भी मोक्षाधिकारी हुए हैं, उन्हें भी मोक्षकी प्राप्तिके लिए इसी संसारमें आना पडा। संसारमें आए बिना मोक्ष नहीं। इस प्रकार संसार कल्याणकारी है। जब यह कल्याणकारी है तो यह आनन्द रहित कैसे होगा। आनन्दरहित पदार्थ कल्याणकारी कैसे हो सकता है? इसके अलावा जब प्रभु आनन्दमय हैं, तब उनके द्वारा बनाया गया विश्व आनन्दरहित कैसे हो सकता है? प्रत्यक्ष प्रमाण भी इसका साक्षी देता है। जल प्यासेको आनंद देता है, अग्नि शैत्यको दूर कर तथा अन्न पकाकर हमें आनंद देता है, वायुके बिना तो क्षणभर भी जीवन नहीं रह सकता, पृथ्वी हमें आधार देती है, हमारा पालन पोषण करती है, आकाश हमें चलने फिरनेके लिए अवकाश देकर हमें जीवन धारण करनेके कार्यमें समर्थ बनाता है। इस प्रकार जब पांचों भूत आनन्ददायी हैं, तो उन्हींसे बना हुआ यह विश्व आनन्दरहित कैसे हो सकता है? इसलिए विश्वको आनन्द-रहित मानना वैदिक सिद्धान्तके प्रतिकूल है। यह प्रभुका विश्व है, यह विराट् प्रभुका शरीर है, यह सूक्ष्मतम प्रभुका स्थूलतम आवरण है। इस सबमें आनन्दमय प्रभु समाया हुआ है। यह सब प्रभुकीही महिमा है। प्रभुकी महिमासेही यह विश्व महिमावान् है। सभी सूर्यचन्द्रादि ग्रह उपग्रहोंमें उसीकी महिमा जगमगा रही है। विश्वका प्रत्येक अणु उसकी महिमा गान कर रहा है। जरा कान देकर सुनो, वह क्या कह रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रभुकी महिमा

विश्वका प्रत्येक परमाणु प्रभुकी महिमा वेदभगवान्‌के शब्दोंमें इस तरहसे गा रहा है।

१ पुरुमायस्य महित्वं दिवः पृथिव्याः मह्ना अति रिरिचे— (२३१) श्रेष्ठ, बुद्धिमान् और कर्ममें कुशल प्रभुकी महिमा द्युलोक और भूलोकके विस्तारसे भी बडी है। उसकी महिमाका वर्णन करना भी असंभव है। वही प्रातः सूर्यके रूपमें उदय होकर अन्धकारका नाश करता है।

२ सः इत् अ-वयुनं ततन्वत् तमः सूर्येण वयुनवत् चकार— (२३२) वही प्रभु फैले हुए घने अन्धकारको सूर्यके प्रकाशसे दूर करके विश्वको प्रकाशमय करता है।

३ त्वावान् त्वत् अन्यः न अस्ति— (२३९) इस प्रभुके समान सामर्थ्यवान् और कोई नहीं है।

४ शचीवतः शाकाः गवां स्तुतयः संचरणीः— (२६६) उस सामर्थ्यशाली प्रभुकी शक्तियां किरणोंकी तरह सर्वत्र संचार करती हैं।

इस सर्व महिमामय प्रभुके रूपको जानना भी सबके लिए आसान नहीं है। कुछ लोग जो अल्पज्ञानी हैं, इस विश्वमें अनेक चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित होते हैं और—

५ अवरासः तं पृच्छन्तः— (२३५) वे अल्पज्ञानी मनुष्य उस प्रभुके बारेमें पूछते हैं। अनेक तरहकी जिज्ञासायें करते हैं। तब

६ ते पराणि प्रत्ना श्रुत्या अनु— (२३५) ज्ञानी मनुष्य इस प्रभुके श्रेष्ठ और पुरातन कर्मोंका वर्णन करते हैं।

प्रभु जो जीवको इस संसाररूपी बंधनमें डालते हैं, वह भी जीवके लाभके लिएही होता है। जो जो प्रभु करते हैं, वह मनुष्यके कल्याणके लिएही करते हैं। जिसे मनुष्य अमंगल समझता है, उसमें भी कोई न कोई मंगल अवश्य छिपा हुआ होता है। अतः ऋषिका कथन है—

७ ते दामन्वन्तः अदामानः— (२६१) प्रभुके बन्धन भी बन्धन न होनेके समान ही होते हैं। उसके बन्धन भी उन्नतिकारक होते हैं। उनमें बंधकर भी मनुष्य उन्नत होता है।

वेद इस सिद्धान्तका भी खण्डन करता है कि यह संसार स्वयं बन गया। वह स्पष्ट कहता है—

८ हस्तयोः कृष्टीः आ अधिथाः— (३१७) वही प्रभु अपने हाथोंसे सब विश्वको रचता है। वह केवल इसे रचता ही नहीं अपितु इस विश्वके—

९ रूपं रूपं प्रतिरूपः बभूव— (४१८) प्रत्येक रूपमें उसी प्रभुका रूप है।

१० इन्द्रः मायाभिः पुरुरूपः ईयते— (४१८) वह ऐश्वर्यशाली प्रभु अपनी अनन्त शक्तियोंसे अनेक रूप बनता है। इसलिए वह प्रभु इस विश्वकी हमेशा रक्षा किया करता है। उसके रक्षा करनेकी अनेक शक्तियां हैं—

११ वृक्षस्य वयाः ऊतयः वि रुरुहुः— (२१५) इस प्रभुके संरक्षण वृक्षकी शाखाओंकी तरह चारों ओर फैल रहे हैं अर्थात् प्रभुकी संरक्षणशक्ति सर्वत्र व्याप्त हो रही है।

कर्म कुशल

इतना विशाल या अनन्त विश्व जिस कुशलतासे चल रहा है, वह भी आश्चर्यकारक है। सभी ग्रह अपने केन्द्रमें तेजीसे घूमते हुए भी एक दूसरेसे टकराते नहीं। अपने अपने मार्ग पर अनन्तकालसे चले आ रहे हैं और अनन्तकाल तक चले जाएंगे। विश्वकी इस गतिके पीछे उसी प्रभुकी कार्य कुशलता है। वह भी सदा कार्यरत रहता है—

१२ अद्य अन्यत् कर्वरं अन्यत् उ श्वः— (२६७) ईश्वर आज एक कार्य करता है और कल दूसरा कार्य करता है। वह कभी शान्त या क्रियाहीन होकर नहीं बैठता। उसकी इस क्रियाशीलताके कारण ही यह संसार चल रहा है।

१३ इन्द्रः सत् असत् मुहुः आ चक्रिः— (२१७) प्रभु सत् और असत् कर्म सदा करता रहता है। यहाँ असत् कर्म और सत्कर्म दुष्ट कर्म तथा श्रेष्ठ कर्मके वाचक नहीं हैं, क्योंकि परमात्मा दुष्ट कर्म कभी नहीं करता। अतः यहां सत् और असत् कर्मका अर्थ होगा उन्नतिकारक कर्म और अवनतिकारक कर्म। प्रभु सज्जनोंके लिए उन्नतिकी ओर ले जानेवाले कर्म करता है अर्थात् उन्हें उन्नतिके मार्गमें प्रेरित करता है और दुष्टोंके लिए अवनतिके कर्म करता है। उन्हें ऐसे मार्गमें प्रेरित करता है कि जिस पर चलकर उनकी निश्चयसे अवनति होती है। इस कर्मके कारणही वह अमर है।

१४ शरदः न जरन्ति, मासाः द्यावः न अवकर्शयन्ति— (२६९) वर्ष, महीने और दिन भी इसे कृश या वृद्ध नहीं बना सकते। वह अनन्तकालसे विद्यमान है, तथापि वह वृद्ध नहीं होता, क्योंकि वह काल और स्थानके व्यवधानसे परे है। इसी सिद्धान्तको योग सूत्रमें "स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहकर स्पष्ट किया है। वह प्रभु प्राचीनसे प्राचीन ऋषियोंका भी गुरु है, क्योंकि काल या समयका उस पर कोई परिणाम नहीं होता। वह सदा तरुण रहता है और सतत कर्म करता रहता है। इसी कर्मके कारण उसमें तरुणों सा उत्साह सदा बना रहता है।

१५ वृद्धस्य अस्य तनूः शस्यमाना वर्धतां— (२१९) इस सनातन प्रभुका शरीर सदा ही प्रशंसित होकर बढता है। सदा ही इसका सामर्थ्य बढता रहता है, इसलिए—

१६ ते शवसः अन्तः न धायि— (३१०) इस प्रभुके सामर्थ्यका कोई अन्त नहीं है।

इसप्रकार साधक या मनुष्य जब सर्वत्र प्रभुकी महिमाका अनुभव करता है, तब बरबस ही उसका मन प्रभुकी उपासनाकी तरफ खिंचने लगता है। प्रभुकी उपासनासे साधकका ही मन उत्तम होता है।

प्रभुकी उपासना

१ देवस्य पदं नमसा व्यन्तः— (४) प्रभुके पवित्र पदको नम्रतापूर्वक की गई उपासनासे ही प्राप्त किया जा सकता है।

२ यज्ञियानि नामानि दधिरे— (४) प्रभुके पवित्र नामोंका ध्यान करते रहें।

३ मर्तः शशमे— (९) मनुष्य ईश्वरकी स्तुति करके शान्ति प्राप्त करे।

४ मर्तः देवं दुवस्येत्— (१७१) मनुष्य प्रभुकी सेवा करे।

प्रभुकी उपासना करनेसे मनुष्यको अनेक तरहके ऐश्वर्योंकी प्राप्ति होती है।

प्रभुकी उपासनासे ऐश्वर्यकी प्राप्ति

१ श्रिये ते पादाः दुवः आ मिमिक्षुः— (१०८) ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिए हम प्रभुके चरणोंकी सेवा करते हैं।

२ विधते पुरूणि वसु त्वे सन्तु— (१३) उपासकको देनेके लिए प्रभुके पास बहुत सारा धन है।

३ सः देवयुः उरुज्योतिः नशते— (२५) देवका भक्त विस्तृत तेज प्राप्त करता है।

४ श्रिये ते पादाः दुवः आ मिमिक्षुः— (३०८) ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिए हम प्रभुके चरणोंकी सेवा करते हैं।

प्रभुकी उपासना करनेसे हर तरहके ऐश्वर्य और इहलौकिक और पारलौकिक दोनों तरहके धन प्राप्त हो सकते हैं। वह अपने उपासककी हरतरहसे रक्षा करता है। क्योंकि—

५ मनुष्याणां सदं इत् मातापिता— (५) वह ईश्वर ही मनुष्योंका सच्चा मातापिता है। अन्य मातापिता तो जन्म देनेके कारण मातापिता हैं, पर बिना किसी स्वार्थके सबकी रक्षा और सबका पालन पोषण करनेके कारण वह प्रभु ही सबका सच्चा मातापिता है।

इस प्रकार प्रभुकी उपासनासेही मनुष्य हर तरहका ऐश्वर्य प्राप्त कर सकता है।

उत्तम बुद्धिकी प्रशंसा

मनुष्यके अन्दर सदा उत्तम बुद्धि रहे। वह दुष्ट बुद्धिका कभी उपयोग न करे। उत्तम बुद्धिकी प्रशंसा करते हुए वेद कहता है—

१ धियः होता अभवः— (१) उत्तम बुद्धिसे ही मनुष्य होता बनता है। अपनी उत्तम बुद्धिके कारण मनुष्य सबसे श्रेष्ठ होता है। अपनी उत्तम बुद्धिका उपयोग करके वह अपनी उन्नति कर सकता है।

२ भद्रयां सुमतौ आ यतेमहि— (१०) हम उत्तम बुद्धिके संरक्षणमें अपनी उन्नतिके लिए प्रयत्न करें। इस उत्तम बुद्धिका उपयोग करके प्रभुकी प्राप्ति भी की जा सकती है।

३ त्वे वष्टि धिषणा धन्या— (८५) प्रभुकी प्राप्तिकी इच्छा करनेवाली बुद्धि धन्य है।

४ धीवतः सखा— (५९८) यह प्रभु भी उत्तम बुद्धिवालोंका ही मित्र बनता है। इसलिए—

५ धीतिं सुमतिं आ वृणीमहे— (११५) हम धारणावती बुद्धि तथा सुमतिको अपने अन्दर धारण करें।

६ शुचतः धीः भीमा आ एति— (२७) तेजस्वी वीरकी बुद्धि भीरु मनुष्यको भयानक दीखती है। जो दुष्ट हैं, वे सदा सज्जनसे घबराया करते हैं।

ज्ञानसे वैभवकी प्राप्ति

१ महः राये चिन्तयन्तः— (२) विशेष वैभव प्राप्त करनेके लिए ज्ञानको प्राप्त करे।

२ जनानां उभयासः रायः— (५) मनुष्योंको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐहिक धन और पारमार्थिक ज्ञानरूप धन दोनों तरहके धन प्राप्त करने चाहिए।

४ तरणे ! त्वं चेत्य' त्राता भूः— (५) हे तारक प्रभो ! तू लोगोंको ज्ञानवान् बनाकर उनका तारण करता है।

४ त्वा ऊतः स मर्तः विश्वा वामा दधते— (९) ईश्वरसे सुरक्षित हुआ वह मनुष्य सब धनोंको प्राप्त करता है।

५ कवये धीतिं आनट्, तं पासि, पिपर्षि— (११०) ज्ञानीकी सेवाके लिए जो कर्म करता है, उसकी सुरक्षा वह ज्ञानी करता है और उसकी इच्छायें वह पूर्ण करता है।

समाजमें ज्ञानका प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। समाजमें कोई भी अज्ञानी न रहे। इसलिए राष्ट्रमें सर्वत्र ज्ञानके प्रचारक हों। इन प्रचारकोंमें कौन कौनसे गुण हों, यह आगे बताया गया है।

ज्ञानका प्रचारक कैसा हो ?

१ विश्वायुः अमृतः अतिथिः जातवेदाः— (३४) मनुष्य पूर्णायु संपन्न, रोग अपमृत्यु आदिसे रहित, अतिथिके समान पूज्य और ज्ञानका प्रचार करनेवाला हो।

२ भानुमद्भिः अर्कैः सूर्यः न— (३८) तेजस्वी किरणोंसे जिस तरह सूर्य प्रकाश फैलाता है, उसी तरह मनुष्य ज्ञानको फैलावे।

३ प्रचेताः पुरुवारः अध्रुक्— (४१) ज्ञानी मनुष्य विज्ञानमें निपुण, अनेकोंके द्वारा प्रशंसनीय तथा द्रोह न करनेवाला हो।

४ सुक्रतुः कविः वैश्वानरः— (६१) उत्तम कर्म करनेवाला ज्ञानी सब मनुष्योंका हित करनेवाला होता है।

५ ज्योतिषा तमः अन्तर्वावत् अकृणोत्— (६४) अपने प्रकाशसे वह अन्धकारको दूर करे। नेता ज्ञानका प्रसार करके लोगोंके अज्ञानको दूर करे।

६ श्याव्याश्वः अंकूयन्तं असूरं आनयत्— (१२३) उन्नतिशील या उन्नतिका मार्ग दर्शानेवाले ज्ञानीकी सहायतासे हम मनुष्योंको अन्धकारमेंसे निकालकर प्रकाशमें लाते हैं।

७ पथिकृत् विदानः सः सुगेषु उत दुर्गेषु नः पुरएता बोधि— (२४१) मार्ग बनानेवाला ज्ञानी सुगम तथा दुर्गम मार्गोंमें लोगोंका अग्रगामी नेता होकर मार्गदर्शन करे, और ज्ञानपूर्वक योग्य रीतिसे उन अनुयायियोंको चलाए और इष्ट स्थान तक पहुंचाये।

ज्ञानका प्रचार करनेवाला मनुष्य तेजस्वी और जिस तरह सूर्यकी किरणें चारों ओर फैलती हैं, उसी तरह ज्ञानकी किरणें चारों ओर फैलानेवाला हो। ऐसे ज्ञानका प्रचार करनेवालेका सर्वत्र सम्मान हो। पर जो ज्ञानसे द्वेष करता हो, उसका नाश हो।

ज्ञानसे द्वेष करनेवालेकी दुर्दशा

१ यः ब्रह्म अति मन्यते, निनित्सात्, तस्मै तपूंषि वृजिनानि सन्तु— (५५१) जो ज्ञानसे द्वेष करे और ज्ञानकी निन्दा करे, उसे ज्वालायें जलानेवाली हों।

२ ब्रह्मद्विषं द्यौः अभिशोचतु— (५५१) उस ज्ञानसे द्वेष करनेवालेको यह द्युलोक संतप्त करे।

३ ब्रह्मद्विषे तपुषे हेतिं अस्य— (५५२) ज्ञानसे द्वेष करनेवालेको अच्छा दण्ड देना चाहिए।

मनुष्य ज्ञानसे कभी द्वेष न करे। ज्ञान परमात्माका प्रतीक है, इसलिए ज्ञानसे द्वेष करनेवाला मानों परमात्मासे ही द्वेष करता है। अतः ज्ञानसे द्वेष न करके उसका सर्वत्र प्रचार ही करना चाहिए।

तेजप्राप्तिका उपाय

१ मित्रमहाः शोचिषा (३०) मित्रके महत्त्वको बढानेवाला, उसके गुणोंको प्रकट करके सर्वत्र उसका यश बढानेवाला, मनुष्य विशेष तेजसे युक्त होता है।

२ अध्वरस्य होतः पावकशोचे (१२०) हिंसारहित कर्मका संपादन करनेवाला पवित्र तेजसे युक्त होता है।

जो अपने मित्रके दुर्गुणोंको छिपाकर सर्वत्र उसके उत्तम गुणोंका ही बखान करता है, तथा हिंसारहित उत्तम कर्मोंको करता है, वह तेजस्वी होता है।

यज्ञकी महिमा

१ ऋता यजासि, महिना विभूः— (१२०) मनुष्य सत्यपूर्वक यज्ञ करे और अपनी महिमासे सर्वत्र प्रभावी बने।

२ मानुषे जने विश्वेषां यज्ञनां होता हितः— (१२६) मानवी समाजमें सब यज्ञोंको करनेवाला मनुष्य हितकारी होता है।

३ होता मनुर्हितः— (११४) हवन करनेवाला मनुष्योंका हितकारी होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ इयक्षन्तः मर्ताः ते अमृतस्य कदा न मिनन्ति —(२३२) यज्ञ करनेवाले मनुष्य प्रभुके धामका नाश नहीं करते।

५ यज्ञः इन्द्रं वर्धात्— (१५५) यज्ञ प्रभुकी महिमाको बढाते हैं।

६ अहेळमानः यज्ञं उप याहि—(१९७) क्रोध-रहित होकर प्रसन्न मनसे यज्ञमें सम्मिलित होना चाहिए।

यज्ञ करनेसे हवाके अन्दर घूमनेवाले रोगके कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और हवा शुद्ध होती है। उस शुद्ध हवासे मनुष्यका स्वास्थ्य बढता है। इस प्रकार यज्ञ करनेसे मनुष्योंका हित होता है।

अग्निकी उत्पत्ति और महिमा

१ वाघतः विश्वस्य मूर्ध्नः पुष्करात् अधि अथर्वा त्वां निरमन्थत— (११८) आधाररूप विश्वके शिरस्थानमें रहनेवाले कमलसे अथर्वाने मंथन करके उत्पन्न किया।

२ ते पूर्तं अक्षिपत् नहि भुवत्—(१४१) अग्निका प्रज्वलित तेज आंखका विनाशक नहीं होता।

सब विश्वका आधाररूप द्युलोकमें जो कमलके आकारका सूर्य है, उसे मथकर अथर्वा अर्थात् प्रभुने इस अग्निकी उत्पत्ति की। इसलिए अग्नि सूर्यका ही एक भाग है। इस अग्नि या सूर्यके प्रकाशसे मनुष्यके आंखोंकी ज्योति नष्ट नहीं होती। अपितु आंखोंका प्रकाश बढता है। ओगलेवाडीमें ओगले ग्लास वर्क्स नामका एक कारखाना है, उस कारखानेमें काम करनेवालोंसे एक महत्वपूर्ण बात यह ज्ञात हुई कि जो मजदूर आगकी भट्टीके सामने काम करते हैं, उनकी आंखें अन्य भागोंमें काम करनेवाले लोगोंकी अपेक्षा अच्छी थीं। इससे ज्ञात होता है कि अग्नि और सूर्यकी किरणोंसे आंखोंकी ज्योति बढती है।

यह अग्नि शब्द अग्रणीका अपभ्रंश है। निरुक्तकार यास्कने "अग्निः कस्मात्? अग्रणीः भवति" कहकर अग्नि शब्दकी व्युत्पत्ति अग्रणीसे बताई है। इसलिए इस अग्निके मंत्रोंमें अग्रणीके गुण बताये गए हैं।

अग्रणीके गुण

१ मित्रमहः तविष्ठः अग्निः—(४४) अग्रणी मनुष्य अपने मित्रोंका महत्व बढानेवाला, शत्रुओंको संताप देनेवाला और तेजस्वी हो।

२ अदब्धः गोपाः अमृतस्य रक्षिता—(६१) किसी शत्रुके सामने न दबनेवाला वीर सबका संरक्षण करता है और अमरत्वका रक्षक भी वही है।

३ वैश्वानरः विश्वं वृष्ण्यं अधत्त -(६४) सब मानवोंका हित करनेवाला नेता अग्रणी सब बल अपनेमें धारण करता है।

४ अजरः राजा—(६६) शासक या अग्रणी जरारहित हो। वह निर्बल न हो। वह वृद्धावस्थामें भी तरुणके समान कार्य करे।

५ अदब्धेभिः गोपाभिः सूरीन् पाहि—(६८) राजा अपनी अदम्य रक्षा-शक्तिसे विद्वानोंकी रक्षा करे।

६ अग्निः प्रचेताः वेधस्तमः ऋषिः—(१०२) अग्रणी नेता ज्ञानी, कर्मप्रवीण और दूरदर्शी हो।

७ सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चं—(११६) सुन्दर और आदर्शरूपसे प्रगति करनेवाला नेता पूजनीय होता है।

राजा या अग्रणी राष्ट्रका कर्णधार होता है। उसी पर राष्ट्रकी उन्नति या अवनति अवलम्बित रहती है। इसलिए राजाको सभी उत्तम गुणोंसे युक्त होना चाहिए। राजाकी मित्रमंडली सज्जनोंसे संपन्न हो, राजा भी अपने मित्रोंके साथ उत्तम व्यवहार करे। मनु महाराजने राजाको मित्रोंके सम्मतिके अनुसार कार्य करनेके लिए कहा है। पर राजा भी अपने मित्रोंको चुननेमें सावधान रहे। वे मित्र खुशामदी न हों, अपितु अपनी उत्तम सम्मति राजाको दें। इस प्रकार समय समय पर अपने मित्रोंकी सम्मति लेकर अपनी प्रजाके हितके कार्योंमें सदा तत्पर रहे। अपने राष्ट्रमें राजा ज्ञानियोंकी हरतरहसे रक्षा करे, तथा वह स्वयं भी ज्ञानी और दूरदर्शी हो। ऐसा ही नेता या राजा पूजनीय होता है। वह राजा वीर और साहसी हो, ऐसे वीर राजाकी महिमा बहुत बडी होती है।

वीरकी महिमा

१ तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेः महिमा पृथिव्याः दिवः प्र ररिचे— (२००) तेजस्वी श्रेष्ठ और शत्रु-नाशक वीरकी महिमा पृथ्वी और द्युलोकसे भी बडी है। अपने शत्रुओंका नाश करनेवाले वीरका यश सारी पृथ्वीमें तो फैलता ही है, पर द्युलोकमें भी फैलता है अथवा जितना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथ्वी और द्युलोकका विस्तार है, उससे भी अधिक इस वीरका यश फैलता है। ऐसा वीर अपने एक भी शत्रुको पृथ्वी पर नहीं रहने देता, इसलिए-

२ पुरुमायस्य शत्रुः न— (२००) अत्यधिक सामर्थ्यशाली वीरका कोई शत्रु नहीं होता।

३ पुरुमायस्य शंयोः प्रतिमानं न अस्ति—(२००) ऐसे बहुत कुशल और सुखशान्ति देनेवाले वीरकी कोई तुलना नहीं है। ऐसा वीर अद्वितीय होता है।

४ पुरुमायस्य शंयोः न प्रतिष्ठि— (२००) उत्तम कुशल और सुखशान्ति देनेवाले वीरोंको दूसरेके आश्रयकी जरूरत नहीं होती। ऐसा वीर अपने ही बाहुबलके आश्रयसे सारे शत्रुओंका नाश करता है।

५ वीळवे न नमते— (२७०) ऐसा वीर सामर्थ्य-शाली शत्रुके आगे भी नहीं झुकता।

६ स्थिराय न नमते— (२७०) स्थिर और दृढ शत्रुके सामने भी नहीं झुकता।

७ ऋष्वाः गिरयः अज्राः— (२७०) बडे बडे पहाड भी इस वीरके लिए सुगम हो जाते हैं।

८ गभीरे चित् अस्मै गाधं भवति— (२७०) गहरा सागर भी इसके लिए उथलासा अर्थात् आसानीसे पार करने योग्य हो जाता है।

ऐसे वीरके मार्गमें कोई भी विघ्न बनकर नहीं आ सकता। यदि कोई विघ्न आता भी है तो उसकी यह वीर कुछ भी परवाह नहीं करता। ऐसा वीर—

९ धृतव्रतः— (२०८) व्रतों और नियमोंको धारण करनेवाला हो।

१० ऊती अरिषण्यन् ऊर्ध्वः स्थाः— (२७१) वीर पुरुष दूसरोंकी रक्षा करनेके लिए सदा उद्यत रहे।

ऐसा वीर सर्वत्र पूजा जाता है और प्रजाओंका प्रिय होता है।

प्रजाप्रियका सम्मान

१ विक्षु प्रियः सपर्येण्यः— (६) जो प्रजाजनोंमें प्रिय होता है, उसीकी पूजा होती है।

२ पुरि जूर्यः रण्वः— (२०) नगरमें वृद्ध मनुष्य सबको उपदेश देनेके कारण सबको प्रिय होता है।

३ अमृतं पायुं जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा निषेदिरे— (११४) जो अमर रक्षक, सदा सावधान रहनेवाला, वैभवशाली और प्रजाका पालक है, उसे सभी प्रजाएं नमन करती हैं।

उत्तम शासक या राजा जो होता है, उसे सभी लोग अपने प्राणसे भी अधिक मानते हैं, अपनी जान देकर भी प्रजायें उसकी रक्षा करती हैं। पर यह तभी होता है कि जब वह—

४ चर्षणीनां प्रेतीषणिः— (८) शासक प्रजाजनोंके पास जाकर उनकी परिस्थिति देखनेवाला हो।

राष्ट्रका शासक अपना भेष बदलकर प्रजाके सुख दुःखका पता लगाए और उन दुःखोंको दूर करनेका प्रयत्न करे।

५ उभयान् अनुव्रता विभूषन्— (११५) राजा दोनों तरहकी प्रजाके अनुकूल आचरण करनेवाला होकर सबको सुखी रखे। राज्यमें ज्ञानी-अज्ञानी, सबल-निर्बल आदिके रूपमें दो वर्गकी प्रजायें होती हैं। राजा सबके अनुकूल होकर सबको सुखी रखे।

६ विशः यत् अद्य वेः— (१२०) प्रजा जो चाहती है, वही राजा करे। राजा प्रजाके प्रतिकूल आचरण कभी न करे। प्रजाके प्रतिकूल आचरण करनेवाला राजा अत्याचारी होकर प्रजाओं पर मनमाने अत्याचार करता है, फिर अन्तमें वह प्रजाओंके द्वारा ही मारा जाता है। इसलिए—

७ राजानः शुचिव्रताः— (१४९) राजागण शुद्ध आचरण करनेवाले हों।

८ ते एजानः चर्षणयः त्राता उत वरूता भव— (२७९) जो भयसे कांपनेवाली प्रजायें हैं, उनका राजा रक्षक और उद्धारक बने।

९ सत्वा पुरुमायः सहस्वान् पत्यते— (२४२) सत्त्ववान् अर्थात् सामर्थ्यशाली, अनेक कौशल्योंसे युक्त और शत्रुका पराभव करनेवाला ही सबका स्वामी हो सकता है।

ऐसा शासक अपने राष्ट्रपर उत्तम रीतिसे शासन करे। राष्ट्रमें सभी आर्य हों। सभी श्रेष्ठ हों। दास कोई न हो। जिस राष्ट्र दास्यता या गुलामगिरीकी वृत्ति प्रजाओंमें होती है, उन प्रजाओंका स्वाभिमान नष्ट हो जाता है और फिर वह राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए प्रजाओंमें महत्त्वाकांक्षा हो, उन्नति करनेकी साध हो इस दिशामें राजा प्रयत्न करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१० दासानि आर्याणि करः—(२५१) दासोंको आर्य बनाया जाए। जिन लोगोंकी वृत्ति दासकी है अर्थात् गुलामगिरी करनेकी है, उन लोगोंकी वृत्तियोंको ऊंचा उठाकर उन्हें श्रेष्ठ बनाया जाए। इस तरह राष्ट्र भी ऊंचा हो सकता है।

वाणीका सदुपयोग

मनुष्यको परमात्माने वाणी दी है। यह उसकी विशेषता है। वह अपनी वाणीके द्वारा अपने मनोभावोंको व्यक्त कर सकता है। मनुष्यके अन्दर वाणीकी शक्ति बडी भारी है, इसलिए मनुष्य अपनी वाणीके उपयोगमें सदा सावधान रहे। वह अपनी वाणीका उपयोग उत्तम कर्मोंमें ही करे।

१ विश्वाभिः गीर्भिः पूर्तिं अभि अश्याम्—(१००) उत्तम वाणीका उपयोग करके हम पूर्णता प्राप्त करें।

२ मर्त्यः दुवः धियं जुजोष, सः पूर्व्यः प्रभसत्—(१०१) जो मनुष्य आशीर्वादके शुभवचन कहता है, वह सर्वश्रेष्ठ होकर प्रकाशित होता है।

३ आसा वह्निः विदुष्टरः—(१३४) मुखसे उत्तम शब्दोंका उच्चारण करनेवाला मनुष्य अधिक ज्ञानी होता है।

ज्ञानी मनुष्य सदा नये तुले शब्दोंका ही उपयोग करता है। अपनी वाणीका वह सदा संयम करता है, इसीलिए वह हमेशा शक्तिशाली होता है। वाणीको शक्तिशाली बनानेका एक दूसरा उपाय है—

हम निन्दा न करें

१ त्वं निदायाः पाहि—(९४) हे प्रभो! तू हमारी निन्दासे रक्षा कर। हम किसीकी निन्दा न करें।

२ परिचक्ष्याणि वचांसि मा वोचं—(५६३) निन्दाके भाषण मैं कभी न करूं।

"दूसरे हमारी निन्दा न करें," यह देखना तो मनुष्यके अपने अधीनकी बात नहीं है। क्योंकि इस संसारमें निष्कारण भी वैरी होते ही हैं, और वे वैरी निन्दा तो करेंगे ही। पर मनुष्य इतना तो कर ही सकता है कि वह स्वयं किसीकी निन्दा न करे। किसीकी निन्दा करना या न करना मनुष्यके अपने अधीनकी बात है। अतः मनुष्य भरसक यही कोशिश करे कि वह किसी की निन्दा न करे।

इस प्रकार वाणीको शक्तिसंपन्न बनानेका पहला उपाय है "किसीकी निन्दा न करना" और दूसरा उपाय है—

*

सत्यपालन

सत्यपालनकी प्रशंसा वेदोंमें बहुत गाई गई है। वेदका कहना है—

१ ऋतपाः ऋतेजाः क्षेषत्—(२५) सत्यपालक और सत्यपालनके लिए ही अपना जीवन देनेवाला दीर्घजीवी होता है।

२ ऋतावा सूर्यः न दूरात् शोचिषा ततान—(८९) सत्यकी रक्षा करनेवाला वीर सूर्यके समान दूरसे ही चमकता है।

३ सत्पतिः वृत्रं शवसा हन्ति—(९७) सत्यका पालन करनेवाला मनुष्य अपने सामर्थ्यसे शत्रुका वध करता है।

४ न मिथूजनः भूत् सः न मुहे—(१९६) जो मनुष्य कभी भी मिथ्यावादी जनके समान असत्यवादी नहीं होता, वह वीर कभी भी मोहित नहीं होता।

५ ऋतावृधः देवः—(५५८) सत्यमार्गकी वृद्धि करनेवाले ही देव कहलाते हैं।

सत्यका पालन बडा कठिन काम है, पर उसका पालन करनेसे मनुष्य दीर्घजीवी, तेजस्वी और देव बनता है। जो मनुष्य सत्यका पालन करता है, वह सबसे हिलमिल कर रहता है।

झगडेका कारण

मनुष्य जो आपसमें झगडा करते हैं, उनमें मुख्य कारण वेदमें इस प्रकार बताये गए हैं—

१ तोके तनये गोषु अप्सु उर्वरासु क्रन्दसी वि ब्रवैते—(२७७) बालबच्चों गौओं, जलप्रवाहों और उर्वरा भूमिके लिए विवाद बढता है, तब झगडे होते हैं।

समाजमें होनेवाले झगडोंके मुख्यतया यही कारण होते हैं। स्त्री, पशु, जमीन और धनके कारण ही झगडे होते हैं। उन झगडोंके कारण तो कभी कभी मनुष्य सभी कुछ गंवा बैठता है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्यको चाहिए कि वह इन विषयोंमें जरा सम्हाल कर व्यवहार करें।

पापसे बचनेका उपाय

१ ऋधद्वाराय अग्नये ददाश, तं मर्तः अंहः न, अदाशिः न—(२६) जो मनुष्य प्रदीप्त अग्नियोंमें हवि अर्पित करता है, उसे न पाप लिप्त होता है, न गर्व। जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्य प्रतिदिन अग्निरूप प्रभुकी उपासना करता है, वह कभी पापी या घमण्डी नहीं होता।

२ सूरः न अस्य दृशतिः अ-रेपाः— (२७) सूर्यके समान मनुष्यका दर्शन पवित्र और निष्पाप हो। जो मनुष्य प्रतिदिन अग्निमें हवि देता है, प्रभुकी उपासना करता है तथा पाप और दंभसे दूर रहता है, ऐसे निष्पाप और प्रभुके उपासकका दर्शन भी मनुष्यको निष्पाप और पवित्र करनेवाला होता है।

३ अन्यकृतः एनं मा भुजेम— (१४०) दूसरोंका किया हुआ पाप हमें न भोगना पडे। जो पापसे दूर रहता है, वह श्रेष्ठ होता है।

कौन श्रेष्ठ है ?

१ देवताता श्रेष्ठः, शूराणां शविष्ठः, मघोनां मंहिष्ठः— (७०५) देवोंमें यज्ञ करनेवाला श्रेष्ठ है, शूरवीरोंमें बलवान् श्रेष्ठ है, और धनिकोंमें उत्तम दान देनेवाले श्रेष्ठ हैं। यज्ञ करनेवाला देवोंमें भी श्रेष्ठ है, तथा बलशाली होकर भी शूरवीर हो, तो बहुत उत्तम है। जो मनुष्य शूरवीर होकर भी यदि बलशाली न हो तो उसकी शूरवीरता किस काम की ? इसी तरह जो बलशाली होकर भी डरपोक हो, तो उसका बल किस काम आएगा ? इसी तरह मनुष्य ऐश्वर्यशाली तो हो, पर जब तक वह दूसरोंको दान न दे, तब तक उसके ऐश्वर्यशाली होनेका समाजको क्या उपयोग ? समाजके लिए तो ऐसे अदानी मनुष्यका ऐश्वर्यशाली होना और न होना सब बराबर है। इसलिए दानशीलतासे समन्वित ऐश्वर्यशालिता ही प्रशंसाके योग्य होती है।

पुरुषार्थकी प्रशंसा

मनुष्यकी पुरुष संज्ञा इसी कारण है कि उसमें पौरुषका निवास होता है। पौरुषका अर्थ है पुरुषार्थ और पुरुषार्थका अर्थ है, उत्साहसे भरकर अनवरत परिश्रम करना। इस पुरुषार्थसे मनुष्य अपने सभी मनोरथ हासिल कर सकता है। वेदभगवान् भी पुरुषार्थकी प्रशंसा करते हैं—

१ क्रत्वा द्रोणे अज्यते— (२१) मनुष्य अपनी उन्नतिके साधन मर्यादित होनेके बावजूद भी अपने पुरुषार्थसे अपनी उन्नति करता रहे। मनुष्यकी उन्नतिके साधन मर्यादित तो होते ही हैं, पर यदि वह उन्हीं मर्यादित साधनोंसे पुरुषार्थ करता रहे, तो वह अपनी सिद्धि तक अवश्य ही पहुंच जाता है। महापुरुषोंकी नजर सदा साध्यकी तरफ ही रहती है। साधन कैसे भी हों, उसकी उसे परवाह नहीं रहती, वह तो उन्हीं परिमित साधनोंसे अपना साध्य प्राप्त कर लेता है।

२ पुरुः पृथुः कर्तृभिः सुकृतः भूत्— (२०४) मनुष्य शरीरसे बडा और गुणोंसे श्रेष्ठ होकर भी अपने पुरुषार्थ या कर्तृत्वशक्तिके कारण ही सत्कारके योग्य होता है। मनुष्य चाहे कितनी भी दीर्घकाय और गुणी हो, पर जब तक वह पुरुषार्थ नहीं करता या उसमें कर्तृत्वशक्ति नहीं होती, तब तक वह समाजमें सत्कृत नहीं होता। मनुष्य वस्तुतः जो पूजा जाता है, तो वह अपनी कर्तृत्वशक्तिके कारण ही। इसलिए मनुष्य क्रियाशील बनकर अपने समाजकी उन्नति करे।

शुभकर्म

१ अरुषः दिवा, अरुषः नक्तं— (६०) मनुष्य जिस तरह दिनमें पापरहित होकर शुभकर्म करे, उसी तरह रातमें भी पापरहित होकर शुभकर्मोंको करता रहे।

२ विश्वेषां यज्ञानां होता मानुषे जने हितः— सब श्रेष्ठ कर्मोंको कुशलतासे करनेवाला मनुष्य मानव समाजमें हितकारी होता है।

३ विश्वे सुदानवः कामिनः क्रतुं जुषन्तः— (१३३) सब दानी सुखकी इच्छा करते हुए शुभकर्म करते हैं।

४ यत् चयध्वे तत् मा कर्म— (५४०) जिसके लिए तुम दण्ड देते हो, वैसा कर्म हम न करें।

५ अतियाजस्य यष्टा नि हीयताम्— (५५०) अविधिपूर्वक कर्म करनेवाला विनष्ट हो जाए।

६ अप्नसा श्रुधीयतः जनान् महित्वा चित् संयत- (६९५) कर्म करके जो श्रेयस प्राप्त करनेके इच्छुक हैं, उन्हें मित्र और वरुण उत्तम कर्मकी तरफ प्रेरित करते हैं।

मनुष्यकी योनि ही कर्मयोनि है। अन्य योनियां तो भोग योनियां हैं। अन्य योनियोंमें तो मनुष्य अपने किए हुए कर्मका भोग ही करता है, पर मनुष्ययोनिमें आकर यह आत्मा कर्म करनेकी अधिकारिणी बनती है। इसलिए मनुष्य इस योनिको पाकर उत्तम ही कर्म करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दानकी प्रशंसा

१ श्रवांसि पृथू करस्ना गभस्ती— (२०६) अन्नादिका विशेष दान करनेके लिए भगवान्‌ने मनुष्यको हाथ दिए हैं।

२ पणेः मनः वि म्रद— (५६९) व्यापार करनेवाले बनियेको जरा नरम कर। कंजूस बनियेको भी दान देनेके लिए प्रेरित कर।

३ पणीनां हृदया आरया परि तृन्धि— (५७१) कंजूसोंके हृदयको आरोंसे काट।

४ आरया पणेः वि तुद— (५७२) आरेसे कंजूसको काट।

५ तत् महित्वं यत् दाशुषे अंहः विचयिष्ठं— (७००) यह देवोंका ही महत्व है कि वे दाताको निष्पाप बनाते हैं।

दान देनेके लिए भगवान्‌ने मनुष्यको हाथ दिए हैं। मनुष्य " सौ हाथोंसे धन इकट्ठा करे और हजार हाथोंसे दान दे। " मनुष्य अपने पासही धन इकट्ठा करके न रखे। यदि कोई धन अपने पासही इकट्ठा करके रखेगा, और न स्वयं खाएगा न दूसरोंको ही खानेके लिये देगा, तो उसके धनका निश्चयसे नाश हो जाएगा। इसलिए मनुष्य धनका दान अवश्य करे।

नमस्कार करनेका तरीका

१ उत्तानहस्तः नमसा आ विवासेत्— (१७१) हाथ उठाकर नमस्कार करके सेवा करे। हाथ उठाकर नमस्कार करना चाहिए। दोनों हाथ जोडकर और उनके हाथोंको सिरसे लगाकर नमस्कार करनेकी भारतीय पद्धति है।

घरका सुख

१ नृवत् सदं अस्मे धेहि— (१२) पर्याप्त पुत्र पौत्रादिसे भरा हुआ घर हमें मिले।

२ अवसा वस्तो नूनं विद्याम— (२८१) हमें संरक्षणशक्ति युक्त घर प्राप्त हों।

३ गावः आ अग्मन्, उत भद्रं अक्रन्— (२९८) गायें हमारे घर आवें और हमारा कल्याण करें।

४ यत् गावः अनुस्फुरान्, छर्दिषः अभिष्टिः— (७०१) जिस घरके चारों ओर गायें घूमती हों, ऐसा घर चाहिए।

५ ऋजिष्यं धृष्णुं— (७०१) सरल व्यवहार करनेवाले मनुष्य जहां रहते हों, ऐसा घर हमें चाहिए।

६ यत् रणे वृषणं युनजन्— (७०१) जो घर युद्धमें बलवान् तरुणको भेज सकता हो, ऐसा घर चाहिए। प्रत्येक घरमें ऐसे तरुण तैय्यार रहें, कि जो समय पडने पर युद्धमें जा सकें।

घरका सुख जीवनके बडे सुखोंमेंसे एक है। जिसे घरका सुख मिल गया, उसका गार्हस्थ्य जीवन उत्तम होजाता है। घरको सुखी करनेमें पशुओंका भी समावेश है। घरमें गायें भरपूर हों, उन गायोंसे घी दूध भरपूर मिलता हो और गोरस पीकर घरके बालबच्चे स्वस्थ और पुष्ट हों, तो फिर घरके सुखका क्या कहना? घरमें मधुरभाषिणी अर्धांगिनी, उत्तम पुत्र और पुत्रियां सुखके स्रोत हैं।

उत्तम पुत्रके लक्षण

१ अप्सां ऋतीषहं सत्पतिं वीरं ददाति— (१०४) पुत्र कर्म करनेमें कुशल, शत्रुका नाश करनेवाला, सज्जनोंका उत्तम पालन करनेवाला और शूरवीर हो।

२ यस्य संचक्षि शवसः भिया शत्रवः त्रसन्ति— (१०४) पुत्र ऐसा हो कि जिसका दर्शन होते ही उसके सामर्थ्यसे डरकर शत्रु कांपने लग जाएं।

३ शवसा पृत्सु, द्यौः न भूम— (२१०) पुत्र अपने सामर्थ्यसे युद्धोंमें विजय प्राप्त करनेवाला और द्युलोकके समान विशाल सामर्थ्यशाली हो।

४ अमृतस्य सूनवः— (५५८) मनुष्य अमर ईश्वरके पुत्र हैं।

पुत्र वीर और सामर्थ्यशाली हो। शत्रुओंको मारकर सज्जनोंका पालन करनेवाला हो। सभी मनुष्य उस अमर ईश्वरके पुत्र हैं, इसलिए सभी उस ईश्वरकी तरह व्यवहार करें। ईश्वर इस विश्वपर शासन करते हुए दुष्टोंका संहार करता है, और सज्जनोंका पालन करता है। इसी तरह मनुष्य भी अपने राज्यपर शासन करते हुए दुष्टोंका नाश करके सज्जनोंका पालन करे।

गो महिमा

गाय वैदिक ऋषियोंकी पूज्या रही है। उन्होंने गायोंका पालन करनेका आदेश दिया है। वेदोंमें कहींपर भी गायोंको मारनेका आदेश नहीं है। इसके विपरीत गायको ' अघ्न्या ' और ' अदिति ' कहकर उसे न मारने योग्य बताया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋग्वेदके षष्ठम मंडलमें ऋषि भरद्वाजने गायकी महिमा इस प्रकार गायी हैं।

१ गावः भगः— (३०२) गायें ही ऐश्वर्य हैं।

२ इमाः याः गावः स इन्द्रः— (३०२) ये जो गायें हैं, वे ही इन्द्र हैं। इन्द्ररूप परमात्मा ही इस पृथ्वी पर गोरूपसे विचर रहा है।

३ कृशं चित् अश्रीरं चित् सुप्रतीकं कृणुथ— (३०३) ये गायें कृश और निस्तेजको हृष्टपुष्ट और सुन्दर तेजस्वी रूपवाला बनाती हैं।

४ गृहं भद्रं कृणुथ— (३०३) गायें घरको कल्याणमय बनाती हैं।

५ गो अग्राः इषः— (३५७) गायका रस अर्थात् गोदुग्ध अन्नरूप है।

गायको वेदमें परमात्माका रूप ही बताया है। श्रीकृष्णका गोपालन प्रसिद्ध ही है। श्रीकृष्ण मानों गायमय ही हो गए थे। परमात्मा ही इस पृथिवी पर गोरूपसे विचार रहा है। गायके दूधका जो नित्यप्रति उपभोग करते हैं, वे चाहे जैसे कृश या दुबले पतले हों, हृष्टपुष्ट होकर स्वस्थ और सुन्दर हो जाते हैं। इस प्रकार घरके सदस्योंको तन्दुरस्त बनाकर गायें घरका कल्याण करती हैं। गायोंसे घरकी शोभा बढती है। गायोंसे रहित क्षेत्र तो उजाड उजाडसा लगता है।

६ अगव्यूतिं क्षेत्रं आ अगन्म, उर्वी सती भूमिः अंहूरणा अभूत्— (४७०) गायोंसे रहित क्षेत्रमें जब हम आए, तो हमें वहां की पृथिवी विस्तीर्ण होने पर भी शत्रुओंके युद्धक्षेत्रके समान प्रतीत हुई। गायोंसे रहित प्रदेश चाहे जितना विस्तृत हो, पर लगता वह युद्धक्षेत्रके समान ही। जिस तरह युद्धक्षेत्र एक भयंकर नीरवताको लिए होता है, उसी तरह गोरहित प्रदेशोंमें किसी भी तरह की शोभा न होनेके कारण उजाड उजाडसा प्रतीत होता है।

६ गो-इष्टौ प्र चिकित्स— (४७०) गायोंके प्राप्त होने पर उनकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए। यदि गायें कभी बीमार हो जाएं, तो उनकी ध्यान पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिए।

८ नव्यसा वचः सबर्दुघां धेनुं आ— (४९२) नवीन और कोमल शब्दोंसे दुधारु गायको बुलाना चाहिए। गायों पर शब्दोंका बहुत प्रभाव पडता है। इस लिए उनके लिए कठोर शब्दोंका उपयोग नहीं करना चाहिए, उनके लिए हमेशा नरम और कोमल शब्दोंका ही उपयोग किया जाए। विदेशोंमें प्रत्येक गोष्ठ (गायोंके बाडे) में रेडियो आदि रखे हुए होते हैं और दूध निकालते समय उन्हें रेडियोंके द्वारा संगीत सुनाया जाता है, जिसके कारण वे प्रसन्न मनसे ज्यादा दूध देती हैं। डण्डोंके द्वारा पीट पीटकर निकाला गया दूध हानिकर ही अधिक होता है, पर जो दूध गायें प्रसन्न मनसे देती हैं, वह दूध निस्सन्देह आरोग्यकर होता है। अतः गायोंको सदैव प्रसन्न रखना चाहिए।

९ गो-अग्राः इषः— (३५७) गायका रस अर्थात् गोदूध अन्नरूप है। गायके दूधमें इतनी शक्ति रहती है कि जितनी अन्नमें।

१० श्रवः अमृत्युः— (४९३) यह गोरस रूपी अन्न मृत्युको दूर करनेवाला है।

११ सुम्नैः एव यावरी— (४९३) गाय सुखोंसे युक्त होकर संचार करती है। गायके अंगप्रत्यंगोंमें देवोंका निवास है, इसलिए उसके शरीरमें सदा ही सुखका भण्डार रहता है। इसलिए जिन प्रदेशोंमें गायें संचार करती हैं, वे प्रदेश सदा सुखमय होते हैं।

उत्तम अन्न

१ यत् अच्युतं तत् अत्ति— (१०७) जो गिरा हुआ नहीं होता, उसी अन्नको खाना चाहिए। दूसरोंके द्वारा जूठा करके छोडे गए या फेंके गए अन्नको नहीं खाना चाहिए। ऐसे अन्नको खाना दारिद्र्यकी निशानी है।

अन्नका सदुपयोग

१ उशन् इमं यज्ञं चनः धाः— (८१) मनुष्य यज्ञ करनेकी इच्छासे अपने पास अन्नका संग्रह करे। अन्नका उत्तम उपयोग यज्ञ करनेमें ही है। अपने पास संचित अन्नका उपयोग समाजके लोगोंको समृद्ध बनानेके कार्यमें किया जाए।

शरीरकी रक्षा

१ तव स्वां तन्वं यजस्व— (८१) हे मनुष्य ! तू अपने शरीरका सत्कार कर।

२ अन्धसः तन्वा— (४३०) मनुष्य अन्नसे पुष्ट बने हुए शरीरसे युक्त हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्य अपने शरीरका निरादर न करे। यह देवोंका मन्दिर है, इसमें सभी देव आकर निवास कर रहे हैं, इसलिए इस मन्दिरको मनुष्य सदा स्वच्छ और उत्तम रखे। इसे वह कभी हेय दृष्टिसे न देखे। इसे उत्तम खान-पानसे हृष्टपुष्ट करके इसे स्वस्थ बनाये।

जल चिकित्सा

१ आपः मानुषीः— (५२५) जल मनुष्योंका हित करनेवाले हैं।

२ मातृतमाः भिषजः स्थः— (५२५) ये जल माताओंसे भी अधिक प्रेम करनेवाले हैं। जिस तरह मातायें अपने प्रेमभरे हाथोंसे अपने बच्चोंका दुःख और रोग दूर करती हैं, उसी तरह जल भी अनेक रोगोंको दूर करते हैं। जल चिकित्सा प्रसिद्ध ही है। जलसे अनेक रोग दूर होते हैं।

सावधान रहना चाहिए

१ जागृवांसः रुशन्तं अग्निं अनु ग्मन् (३) जागृत रहनेवाले साधक तेजस्वी अग्निका अनुसरण करते हैं।

२ जागृवांसः रयिं अनु ग्मन्— (३) जागृत रहकर प्रयत्न करनेवाले मनुष्य ऐश्वर्यको प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य सदा सावधान रहते हैं, वे हर तरहका ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। उन पर कभी भी कोई दुष्ट आक्रमण नहीं कर सकता, और यदि कोई करता भी है, तो उससे आसानीसे बदला लिया जा सकता है।

दुष्टोंसे बदला

१ अश्नस्य पूर्व्याणि चित् शिश्नथत्— (३५) दुष्टोंके द्वारा पहले किए गए दुष्कर्मोंका भी बदला लेना चाहिए। दुष्टोंको कभी सस्ता नहीं छोडना चाहिए। जब पांच पच्चीस वर्षके बाद अवसर मिले, उनसे बदला ले ही लेना चाहिए। ऐसा करने पर वे दुष्ट कभी भी प्रबल नहीं होंगे।

बलका सदुपयोग

१ दुस्तरीतुः सहः— (१) मनुष्योंका बल दुष्टोंको मारनेके लिए ही है।

२ ऊर्जः न पात्— (१५०) मनुष्य अपने बलको अधःपतित न करे।

दुष्टोंका नाश करनेमें ही अपने बलका उपयोग करे। वह अपने बलसे सज्जनोंकी रक्षा और दुष्टोंका नाश करे। यही बलका सदुपयोग है।

उन्नतिका मार्ग

१ औशिजः पत्मन् दीयन्— (३८) जिस तरह सूर्य अपने मार्गसे जाता है, उसी तरह मनुष्य अपने निश्चित मार्गसे चले।

२ अवृकेभिः पथिभिः नः रायः स्वस्ति— (४०) उपद्रवरहित मार्गोंसे हमें धन और कल्याण प्राप्त हो।

जिस तरह सूर्य अपने सीधे सरल मार्गसे प्राणियोंको अपना प्रकाश देता जाता है, उसी तरह मनुष्य भी सब पर उपकार करता हुआ सीधे और सरल मार्गसे जाए और इस प्रकार उत्तम मार्गसे चलता हुआ अपनी उन्नति करे।

इस प्रकार इस षष्ठ मण्डलमें ऋषि भरद्वाजने अनेक उत्तम उपदेश दिए हैं, जो मननीय और आचरणीय हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैवत-संहिता

सम्पादक— म. म. पं. श्री. दा. सातवलेकर

वेदोंमें पूजक ऋषियोंकी अपेक्षा पूजनीय देवोंकी प्रधानता है। क्योंकि उपासककी अपेक्षा उपास्यकी मुख्यता सर्वत्र होती है। उपासक उपास्यके गुणोंको अपने अन्दर लाकर तद्वत् बनना चाहता है। वेदोंमें भी ऋषि उपासक हैं और देवता उपास्य। ऋषिगण अल्पगुणान्वित हैं और देवता सर्वगुणान्वित। ऋषिगण देवताओंके गुण अपने अन्दर धारण करना चाहते हैं और देवसदृश बनना चाहते हैं। इस प्रकार देवोंका स्थान मुख्य है।

ये देवता संस्थामें अनेक हैं, पर उनके मन्त्र चारों वेदोंमें बिखरे पडे हैं। अग्निके कुछ मन्त्र ऋग्वेदके १ मण्डलके १ सूक्तमें आए हैं, तो कुछ मन्त्र उसके २४ वें सूक्तमें आए हैं। इसी प्रकार इन्द्रादि देवोंके मन्त्रोंकी भी अवस्था है।

इस संहितामें देवताओंके अनुसार चारों वेदोंका मन्त्रसंग्रह है। इन्द्रके चारों वेदोंमें जितने मन्त्र आए हैं, उन सबका एक जगह संग्रह कर दिया है। इसी प्रकार अन्य देवोंका भी किया है। इससे वेदका अध्ययन करनेवालोंको बडी सुविधा होगी। उन्हें चारों वेदोंको खरीदनेकी कोई आवश्यकता नहीं। १७ पृष्ठोंमें उत्कृष्ट भूमिका युक्त आकर्षक छपाई, आकर्षक जिल्द , डबलक्राऊन ८ पेजी साइज, भूमिका १७ पृष्ठ, १०७८ पृष्ठ मूल्य ३०) (डा. व्य. पृथक्)

मन्त्री— स्वाध्याय-मण्डल, पो. 'स्वाध्याय-मण्डल (पारडी)' पारडी, [जि. बलसाड]

एक नन्हासा निवेदन

"वेद विश्वविद्यालयमें आपका योगदान अपेक्षित है"

भारत अपनी आध्यात्मिक गरिमाके कारणही विश्ववंद्य रहा है और रहेगा यही नही वरन इसके इसी महात्म्यने विश्वके सर्वोच्च गुरु आसन पर भी प्रतिष्ठित किया। कहनेका तात्पर्य हमारी आध्यात्मिक थाती अतुलनीय है जिसके स्रोत वेद हैं। वेद ज्ञान विज्ञानकी अथाह राशि संजोये युगोसे सृष्टिको संवार रहे हैं और भविष्यमे भी संवारेंगे, जिनकी महत्ताको आंकना आसान नहीं है।

आज अणुयुगमें आकुल घुट रही मानवता भौतिकतामें भटक गई है जिसे उबारनेमें केवल भारतीय संस्कृतिही सक्षम है जिसका लक्ष्यही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' है। अतः विश्वबंधुत्वके भावकी प्रेरक भारतीय संस्कृतिके आधार स्तम्भ वेदोंके ज्ञानालोकका प्रसार आज विश्वके लिए वरदान सिद्ध होगा जिसका शुभारम्भ स्वामी दयानंद सरस्वतीके द्वारा हो चुका है।

युगके लिए अपेक्षित अध्यात्मकी अमृत राशि उडेलनेकी कामनासेही दिल्लीमें एक महर्षि दयानंद वेद विश्वविद्यालयके निर्माणका शुभ संकल्प पं. वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारीने किया है जिसके लिए जनता जनार्दनका सहयोग अपेक्षित है। यह पुनीत व लोकमंगलकारी कार्य शीघ्रही पूर्ण हो इस दृष्टिकोणसे पं. वेदपथिक धर्मवीर आर्यने स्वयं लिखित आध्यात्मिक पुस्तको व गायत्री आदि चार्टोंसे होनेवाली आय विश्व विद्यालयके निर्माण हेतु देनेका संकल्प किया है। अतः जनता-जनार्दनसे मेरा सानुरोध निवेदन है कि शीघ्राति शीघ्र ११) श्री वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी, अध्यक्ष, महर्षि दयानंद वेद विश्वविद्यालय निर्माण समिति, सरायरुहेला, नई दिल्ली-५ को भेजकर उक्त आत्मविकासका साहित्य प्राप्त कर पुण्य कार्यका भागी बने।

शोभनाथ पाठक एम. ए. (हिन्दी संस्कृत) साहित्यरत्न, रिसर्च स्कालर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैदिकधर्म Regd. No. G. 71 Vaidic Dharma R. No. 11025/57

मुफ्त भेंट मुफ्त भेंट मुफ्त भेंट

आज ही इस योजना का लाभ उठाइए। इस योजनामें आपके द्वारा खरीदी गई पुस्तकोंके साथ अन्य पुस्तकें आपको संस्था की ओरसे मुफ्तमें भेंट रूपमें दी जाएंगी।

योजना – १ – (१) अथर्ववेदका सुबोध अनुवाद (पांच भागोंमें)

कीमत रु. ६०–०० (डाकव्यय अलग रहेगा)

इन पांचों भागोंको एक साथ खरीदनेवालेको संस्थाकी ओरसे–

(१) ऋग्वेदसंहिता – (मूलमात्र)

(२) यजुर्वेदसंहिता–(मूलमात्र) या (२) सामवेदसंहिता– (मूलमात्र)

ये दो पुस्तकें मुफ्तमें दी जाएंगी। अथर्व – अनुवादके पांचों भाग हिन्दी–मराठी – गुजराती इन तीनों भाषाओंमें उपलब्ध हैं।

योजना – २ – (१) गीतापुरुषार्थबोधिनी मूल्य रु. ३०–००

(२) सामवेदभाष्य मूल्य रु. १८–०० (डाकव्यय अलग)

इन दोनों ग्रंथोंको एक साथ खरीदनेवालेको संस्थाकी ओरसे—

ऋग्वेदसंहिता (मूलमात्र)

मुफ्तमें दी जाएगी। योजना–२ की पुस्तकें हिन्दी तथा मराठी भाषाओंमें उपलब्ध हैं

योजना – ३ – (१) अथर्ववेदका सुबोध अनुवाद —

(पांच भागोंमें) मूल्य ६०–००

(२) गीतापुरुषार्थबोधिनी मूल्य ३०–००

(३) चाणक्य सूत्राणि मूल्य १८–०० (डा. व्य. अलग)

इन तीनों पुस्तकोंको एक साथ खरीदनेवाले को संस्थाकी ओरसे—

(१) ऋग्वेदसंहिता (मूलमात्र)

(२) यजुर्वेदसंहिता (मूल) अथवा सामवेदसंहिता (मूल)

(३) पं. सातवलेकर—जीवनप्रदीप (हिन्दी)

ये पुस्तकें मुफ्तमें दी जाएंगी। योजना – ३ की सभी पुस्तकें हिन्दी और मराठी भाषाओंमें उपलब्ध हैं।

यह "मुफ्त भेंट योजना" दिसम्बर १९७२ तक ही रहेगी। अतः शीघ्रता करें और आज ही अपना ऑर्डर भेजें। ऑर्डर देते समय किस भाषामें पुस्तकें चाहिए इसका भी उल्लेख अवश्य करें। पुस्तकों के लिए आज ही लिखें।

व्यवस्थापक

स्वाध्याय मण्डल, पारडी

जि. बलसार (गुजरात)

मुद्रक और प्रकाशक– व. श्री. सातवलेकर, भारत मुद्रणालय, पोस्ट– 'स्वाध्याय मण्डल, पारडी' [जि. बलसार]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu